स्वाधीनता-संग्राम : जोश और होश

अंक—१

(डलहौजी एक चुस्त पेंट और कालॉ पेंट के ऊपर गाउन पहने हुए नंगे सिर एक बड़ी कुर्सी पर बैठा है। आगे दोनों ओर की कुर्सियों की दो कतारों में से दाहिनी कतार में क्रमशः सैनिक वर्दी में आर्मी कमांडर, ढीली पेंट और खुले गले के नीले कोट में चीफ डाइरेक्टर, और इसी तरह की ब्राउन पोशाक में हैट लगाए चीफ कन्ट्रोलर बैठे हैं। बाईं ओर की कतार में पेन्ट और सफेद फुल कोट में सैक्रेटरी, न्यायाधीश की पोशाक पहने चीफ जस्टिस और वकील की सी पोशाक में लॉ कमिश्नर बैठे हैं। सबके सामने मेज है जिस पर शराब की बोतलें और प्याले रखे हैं। वे घूंट लेते दिखाई दे रहे हैं। कुछ प्लेटें रखी हैं जिनमें नमकीन बिस्कुट हैं।)

(पर्दे के पीछे से सामूहिक आवाजें आ रही हैं—

"राम रहीमा एक है, कृष्ण करीमा एक।
मुस्लिम हिन्दू एक है, हिन्दू मुस्लिम एक॥"

'—बहादुरो, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो!' इतने में 'धांय-धांय' की आवाज, फिर 'आह! आह!' की चीख और एकाएक चुप्पी।)

डलहौजी —(प्याली को जोर से मेज पर रखते हुए चिढ़कर) कितने बेवकूफ और बदतमीज हैं ये लोग कमांडर! पिछले ढाई सौ सालों में इन्होंने हमसे क्या सीखा? इन भेड़ बकरियों को ...

आर्मी कमांडर —यी लार्ड, ये जाहिल एक ही लैंग्वेज समझते हैं ...... हण्टर की लैंग्वेज! लॉ-कमिश्नर की बात इनके भेजे में .....

लॉ-कमिश्नर —यू आर राइट कमांडर! अब से सौ साल पहले कप्तान क्लाइव और वाट्सन ने उस मारवाड़ी जगत सेठ और मीर जाफर को तो समझा दिया, पर वो नवाब का बच्चा सिराजुद्दौला फिर भी नहीं समझा। जून 1757 में मीरजाफर की मदद से उस नौजवान सिराजुद्दौला को प्लासी में कत्ल करवाकर ही डिसिप्लिन कायम करना पड़ा। इडियट यहां के ये लोग मीर जाफर को 'गद्दार' कहते हैं। जगत सेठ को भी 'गद्दार' कहते हैं। (प्याला उठाकर पीने लगता है।)

[illegible] —लेकिन कमिश्नर, तुम और मिस्टर [illegible] तो अच्छी तरह जानते हो कि ईस्ट इंडिया कम्पनी और ब्रिटिश पार्लियामेंट ने हिन्दुस्तान को [illegible] से इस तरह से किसने [illegible] नियंत्रित किया है। सबसे पहले रेग्युलेटिंग एक्ट पास कर भारत में [illegible] नवाबों, नवाबों के गवर्नर जनरल बनाया गया, सलाह कौंसिल बनाई गई कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट बनाया गया। इसके कुछ साल चार्टर पर फिर विचार हुआ। हमें 'अत्याचारी, लुटेरे, शोषक, दमनकारी' और पता नहीं क्या-क्या कहा गया लेकिन आखिर हमारी सच्चाई साबित हो गई और ब्रिटिश पार्लियामेंट ने भी मान लिया कि कम्पनी और [illegible] ओर से गवर्नर जनरलों ने जो किया ठीक किया। हमने [illegible] कायम किया। आखिर [illegible] (कन्ट्रोलर की तरफ इशारा करते हुए प्याला उठा लेता है।)

कंट्रोलर —यस सर, सन 1813 के चार्टर ने कन्ट्रोल-कौंसिल को ज्यादा अधिकार और दिए, किन्तु कम्पनी के विशेषाधिकारों की भी सुरक्षा कर दी। अब दोहरा शासन होने से हिन्दुस्तान को काबू करना आसान हो गया। हम इन करोड़ों पशुओं को जो बार बार सींग मारते रहते थे-इन हकों के बिना बाड़े में नहीं बांध सकते थे। आगे चलकर हमने इसी तरह के और दण्ड-कानून बनाकर इस मुल्क को कानून में रहना सिखाया। कम्पनी का शासन और कड़ा और मजबूत हो गया।

चीफ जस्टिस —'रूल ऑफ लॉ' तभी तो कायम हो सका।

चीफ डाइरेक्टर —और बिना लॉ एण्ड ऑर्डर के बिजनैस हो भी कैसे सकता है?

चीफ जस्टिस —और यदि हेस्टिंग्ज चीफ जस्टिस इम्पी की सहायता से नन्दकुमार जैसों को सरे आम फांसी की सजा नहीं दिलवाते तो क्या उस जैसे लाखों लोगों की बद जबानी को हमेशा के लिए खामोश किया जा सकता था?

डलहौजी —वैल कमांडर ! इस देश के देवता तुम्हारा शुक्रिया अदा करते होंगे कि तुम उन्हें नर-बलियां चढ़ाकर खुश करते हो ! दर-असल हम जितनी इनकी भलाई करते हैं—ये बार-बार बलवे मचाकर अपनी मौत बुलाते हैं। हमने इनकी पुरानी शिक्षा को तोड़ फोड़ कर इन्हें अंग्रेजी सिखाई ताकि ये अर्जी लिख सकें, दफ्तर चला सकें और तहजीब हासिल कर सकें। हमने इन्हें भूगोल सिखाया और इतिहास भी कि हिन्दुस्तान एक गर्म मुल्क है, इसलिए यहा के लोग आराम पसन्द और नाजुक तबियत है। उन्हें हमें देखकर मेहनती बनना और समुद्र पार जाकर व्यापार करना सीखना चाहिए। हमने ......

डाइरेक्टर —मी लार्ड ! हमने बुनकरों को बताया कि तुम्हारे कपड़े की बुनाई बढ़िया तो है, लेकिन जैसा हम कहते हैं वैसा करो। वे नहीं माने, आखिर हमें उनके अंगूठे और हाथ इसलिए कटवाने पड़े कि वे हमारी तिजारत के सांचे में ढलकर ग्रेट ब्रिटेन की दौलत बढ़ाने में मदद करें। हमने दस्तकारों को दस्तकारी का नया तरीका सिखाया कि वे हमारी मशीनों का करिश्मा देखें और सीखें। हमने रेलें बिछादी ताकि हिन्दुस्तान का माल ले जा सकें और वहा से पक्का माल लाकर मंडियों में पहुंचा सकें।

मी लार्ड, तिजारत करने में तमीज चाहिए। बिना तमीज के ये हिन्दुस्तानी पैसा मटकों में भरकर गाड़ देते हैं। हमने जबरदस्ती घरों में घुसकर गाड़े गये सिक्कों, जवाहरातों और सोने चादी को उन्हें मारपीट कर भी निकाला तो सही। तभी तो वह दौलत आज इतने बड़े ब्रिटिश एम्पायर की सेवा में काम आ रही है। वे कहते हैं कि हमने बगाल लूट लिया—वे नहीं जानते कि उस महान् देश के लिए हजारों बगाल भी लुटें तो वह कुरबानी झेलनी पड़ेगी।

कंट्रोलर —हां, अच्छी याद दिलाई डाइरेक्टर ! बगाल के अकाल में भूख से मरे लाखों लोगों की फिक्र है उन्हें—हमारे लगान को चुकाने की कोई फिक्र नहीं। अरे, भूख-भूख चिल्लाकर तुम सरकारी कानून तोड़ना चाहते हो। डिसिप्लिन डिसिप्लिन हो हाय ! हमारे मातहत भेड़ बकरियों की [illegible] की तरह

वक्त है और कमिश्नर महाशय तो जानते ही हैं कि हमने किसानों के लिए क्या नहीं किया। हमने........

कमिश्नर —सब याद है मुझे महोदय, बंगाल में स्थायी बन्दोबस्त का तरीका लागू करके हमने किसानों के जमीनी हकों को छीनकर जमींदारों को सौंप दिया ताकि वे कन्ट्रोल में रहें और जमींदार किसानों की खेती का एक हिस्सा खुद लें, हमारा हमें दें और कुछ हमारे कर्मचारियों का भी पेट भरें। बाकी में वे अपना खर्च चलाएं। जमींदार यदि निकम्मा हुआ तो उसकी जमीन नीलाम करने का प्रबन्ध किया। इतना अच्छा स्थायी बन्दोबस्त करते हुए भी बंगाल का किसान गरीबी में तड़पने लगा तो यह उसी का तो कसूर है। दक्षिणी भारत में हमने भूराजस्व को वसूल करने की प्रथा कायम करके किसान को अपनी कुरबानी देनी सिखायी ताकि सारे साम्राज्य का भला हो। इसमें भला, किसान के बरबाद होने की क्या बात थी? हमने मध्य भारत में मौजा वार या मालगुजारी लागू की तो भी किसान कहने लगे कि हम जागीरदारों और सरकार दोनों के द्वारा चूसे जा रहे हैं और यही हाल पंजाब की किसानी का हुआ।

डलहौजी —किसान... किसान .. किसान, बन्द करो इस किसान के किस्से को! झोपड़ी, भूख, कगाली, अकाल, लगान का रोना तड़पना....गिड़गिड़ाना! फिर भी कितने बलवे मचाये हैं इन नरकंकालों ने... राजा-बादशाह-वीर-कवि सबसे ऊपर मानो यह किसान ही इस देश का हीरो हो! हां .. हा.... हा....हा....किसान हीरो!

(नेपथ्य में समवेत स्वर में 'हलधर उठ, हथियार ले, धावा बोल, हमला बोल!' जोर से नारे की गूंज-'हमला बोल, धावा बोल!' इतने में जोर से 'चार्ज!' का आदेश, फिर 'धांय-धांय' की आवाज 'आह! ओह!' की चीख और फिर एकाएक चुप्पी।)

कमांडर —श्री मांई, मगर दर्द भरी चीखें ही दिल दहलाती तो चल चुका एडमिनिस्ट्रेशन! ग्रेट ब्रिटेन के लिए हमारो चन्द मानो हिन्दुस्तानी भेड़-बकरी लोगों का खून भी बहाना पड़े तो कोई

ज्यादती नहीं। उस साम्राज्य की भलाई के लिए तोड़-फोड़ रिश्वतखोरी, छलकपट, झूठ-सच, आतंक-हत्या, इंसानियत-हैवानियत, अनाचार-अत्याचार सब जायज हैं जिसका सूरज कभी अस्त नहीं होता।

मी लॉर्ड, ये सैक्रेटरी, महोदय बैठे है जिनके पास हिन्दुस्तानियों की गुस्ताखियों की पूरी फाइल है जो हमारे गुप्तचर विभाग ने भेजी है। जरा सैक्रेटरी साहब बताएं कि बलवे किस-किस ने कहां-कहां किए।

–(फ़ाइल खोलकर पढ़ते हुए) —मी लॉर्ड हमारे खिलाफ यहां के सामंती सरदारों ने ये बगावतें की हैं :–विजयनगर के विजयराज की बगावत, केरल के पायरस्सी राजा की बगावत, अवध के नवाब वजीरअली की बगावत, गंजाम के जमींदारों की बगावत, दक्षिण के पाइयकारों की बगावत, वेलूथपी के नेतृत्व में त्रावणकोर की बगावत, रानी येनम्मा के नेतृत्व में कित्तूर (मैसूर) की बगावत, असम में गदाधरसिंह और कुमार रूपचन्द के नेतृत्व में बगावत, कुर्ग का मोर्चा, समलपुर में सुरेन्द्र साई के नेतृत्व में बगावत, बुंदेलखण्ड में मधुकरशाह बुंदेला की बगावत, और आंध्र में नरसिंह रेड्डी की बगावत। इन सारी बगावतों में सामंतो की खास ताकत किसानों और दस्तकारों की थी।

—हुंम ! हमारी बिल्ली और हमी से म्याऊं ? और कुछ है आपकी फाइल में ?

—यस मी लॉर्ड ! किसानों के अपने विद्रोहों में खास-खास है :– गोरखपुर का विद्रोह, रंगपुर (बंगाल) का विद्रोह, सुवादिया (बंगाल) का विद्रोह, बरासात के (बंगाल के चौबीस परगना जिले में) तीतू मीर का विद्रोह, मैसूर की रैयत का विद्रोह, फरीदपुर जिले का फराजी विद्रोह और महाराष्ट्र का सर्वेक्षण हंगामा।

किसान जो सैनिक हो गए उनके विद्रोहों में हैं :–पाइकों का विद्रोह, पश्चिम घाट के कोलियों का विद्रोह, पूना के रमोलिया का विद्रोह और कोल्हापुर का गड़करी विद्रोह आदि।

और आदिवासी किसान विद्रोहों में खास-खास विद्रोह थे–बांकुड़ा और मेदिनीपुर जिले के चोआड़ विद्रोह, नील विद्रोह, निम्न भूमि में आदिवासियों का विद्रोह, गारो विद्रोह, खसिया विद्रोह, सिंगफो विद्रोह, छोटा नागपुर में कोल विद्रोह, सम्भलपुर में गोंड विद्रोह, उड़ीसा में खोंड विद्रोह, आसाम में अबोरों, लुशाइयों और नागाओं के विद्रोह और सबसे खतरनाक संथालों का विद्रोह।

सन् 1764 में बंगाल आर्मी में जब पहला विद्रोह हुआ था तो हमने 22 सिपाहियों को तोप के मुंह से बांधकर उड़ा दिया था सर! फिर भी दक्षिण भारत के सिपाहियों ने 'वेलोर विद्रोह' किया, बंगाल आर्मी में 26वी, 47वी और 62वीं पल्टन में बगावत हुई जिसमें हमें अनेक सैनिकों को मृत्युदण्ड देना पड़ा, बनारस में गृहकर और बरेली में पुलिस टैक्स के खिलाफ हड़तालें हुई। इन बगावतों का रूप हथियारबंद था।

डलहौजी
—और यह हमारी ही काबलियत थी कि हमने इन सारे बलवों को कुचल डाला चाहे हमें तोप से बांधकर लोगों को उड़ाना पड़ा हो, चाहे सरे आम फांसियां देनी पड़ी हों, चाहे बच्चों को मां-बाप के सामने कत्ल करना पड़ा हो, चाहे औरतों की गोद से बच्चे छीनकर उनके स्तनों को काटकर फेंकना पड़ा हो, चाहे बलात्कार कर लाश को खाई में फेंकना पड़ा हो या जलती आग में भालों से धकेल-धकेल कर जवानों को भूनना पड़ा हो। यह सब हमने उस महान कौम के लिए किया जिसे दुनिया पर राज करने का हक खुदा ने बख्शा था, उस महान ब्रिटिश सल्तनत के लिए किया जिसकी छत्रछाया में दुनिया तहजीब सीख सके और इस मुल्क हिन्दुस्तान की भलाई के लिए किया जहां सब लोग सहनशीलता और आराम की जिन्दगी बसर करते हुए जंगलीपन से ऊपर उठकर अहिंसक इंसान बन सकें।

(इतने में नेपथ्य में समवेत स्वर में आवाज आती है)

"जल्लादों की मौत चाहिए   शैतानों की मौत चाहिए
जल्लाद हुकूमत तोड़ दो   शैतान हुकूमत [illegible]
आवाज दो हम एक हैं।"

'फिर 'धांय-धांय' की आवाज उसके साथ 'आह्-ओह् !'
की चीख और फिर एकाएक चुप्पी ।)

—यह सब तो पुराना किस्सा है। अब इसको बन्द करें और सोचें कि *आगे हमारा प्लानिंग क्या होगा ? क्या हमें .....*

—जो भी प्लानिंग हम करें, लेकिन यह सबसे अहम बात होनी चाहिए कि हम हिन्दुस्तान की गरीबी और मुर्दानगी पर कत्तई *रहम न खाएं। हमें याद रखना है कि हमारे हाथ में नित* नए सोने के अण्डे देने वाली यह मुर्गी है। अभी इसमें अपार दौलत है जिसे हासिल करने का हमें हक है। यह सारा मुल्क अब हमारी जायदाद है।

—बस महाशय, इस जायदाद पर किसी हैदरअली या बापू गोखले ने आंख उठाई तो हमने उसको चैन से जीने नहीं दिया और किसी टीपू ने उंगली उठाई तो हमने उसको टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिया और आगे भी हम ब्रिटेन के हितों के *खिलाफ जो भी सिर उठाएगा—उसे कुचलकर रख देंगे,* रहम करना बुजदिली का जज्बात है।

—साहबानो ! कानून बनाना, उसको दोहरे-तिहरे मतलब देने वाले शब्दों में लिखना और फिर उसको लागू करने का तरीका ईजाद करना हमारा काम है। अब तक हमने जो कानून बनाए हैं वे सब ऊपर से दिखने में सबकी भलाई वाले हों, पर दरअसल उनसे हमारी तिजारत और हुकूमत को ही लाभ हुआ है। हम आगे उनसे भी ज्यादा मुनाफेबाजी से काम लेंगे-आप यकीन रखिए।

—न्याय-अन्याय की बात छोड़ो। फैसला देना हमारे हाथ में है और हमारी माया हम ही जानते हैं या जानता है खुदा जो इस धरती पर है नहीं। हम रात को दिन और दिन को रात साबित कर देंगे।

—(खड़े होकर) अब आप लोग ध्यान लगाकर सुन लें। हमें अब यहां वक्त बरबाद नहीं करना है। यहां के लोग हमारे अत्याचारों, छलकपट, रिश्वतखोरी, मुफ्तखोरी, भ्रष्टाचार और हमारी बेईमानियों की चाहे जो चर्चा करें व हमारा कुछ

नहीं बिगाड़ सकते। कानून हमारे हाथ में, कमिश्नरियां हमारे कब्जे में, दौलत पर हमारा हक हो चुका है, फौजी ताकत हमारे पास है।

हमें 1834 की उस नीति का कठोरता से पालन करना है जिसमें किसी शासक के मरने पर वह किसी और को गोद न ले सके। हमें उसका राज हड़पना है। यही हमारी 'लैप्स' अर्थात् 'अपहरण' या 'हड़प' नीति है।

इसका अर्थ हमें व्यापक तौर पर समझ लेना है। हम राज्य हड़पने के लिए राज्य पर झूठे आरोप लगाकर शासक को हटाएंगे, रिश्वतें देकर गद्दारों को अपनी ओर कर उनकी ताकत तोड़ेंगे, झूठे कानून और झूठे कागज बना छलकपट से राज्य छीनेंगे, लड़ झगड़ कर राज्य हड़पेंगे हम चाणक्य नीति पर चलेंगे। हमें पंजाब, सतारा, झांसी नागपुर आदि सभी बचे खुचे राज्यों को हड़पकर अपने में करना है। हमें सारा हिन्दुस्तान हड़पना है चाहे इ लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े।

लेकिन कब्जा कर लेना ही काफी नहीं है। हमें हिन्दुस्तानियों का ऊपर का रंग तो हिन्दुस्तानी ही रखना लेकिन उनका पहनावा बदलना है, उनकी भाषा बदलनी है उनकी तहजीब बदलनी है और उनका मजहब तक बदलना है। हमें उन्हें यूरोपीय कल्चर और ईसाई मजहब में बदलना है।

याद रखो हमें इस मुल्क के किसान, दस्तकार और आम मेहनतकश को अपने घोड़ों की टापों के नीचे कुचले रखना है जो हर बगावत के असली हीरो होते हैं। हमें राजाओं और बादशाह की सल्तनतें हड़पनी हैं जिसके लिए अफसरों, फौजियों, बाबुओं, देशी व्यापारियों और बुद्धिजीवियों को ललचाना है, फमाना है, भ्रष्ट करना है और तोड़ना है।

याद रखो-हमारी नीति 'लैप्स नीति' है, हमारी नीति को यहां की भाषा में 'अपहरण नीति' ...

का चीर अपहरण इसे 'हड़प नीति' कहते हैं यानि येन केन प्रकारेण दूसरों की जर-जमीन-जोरू को हड़पना।

(इतने में नेपथ्य में आवाज होती है, हम प्लासी का बदला लेंगे, हम किसानों, मेहनतकशों और वीरों के खून का बदला लेंगे ! हम शहीदों के खून का बदला लेंगे।' इतने में फिर 'धांय-धांय' की आवाज फिर से चीख और चुप्पी।)

डलहौजी —अब आप जा सकते हैं।

अंक-२ दृश्य-१

(कानपुर के पास बिठूर में युवक नाना साहब अपने एक भीतरी कमरे में बैठा है। नाना के सर पर पेशवा पगड़ी है। गले में मोतियों की कंठी है। बल खाई मूंछों वाला यह जवान जिसकी बड़ी-बड़ी आंखों में चमक है। वह अंगरखा पहने हुए है कमर कसी हुई है और एक लम्बी तलवार पर हाथ रखे हुए है। इतने में कोई प्रहरी आकर झुककर प्रणाम करता है!)

नाना —कहो, कौन आया है ?

प्रहरी —साहब, खां साहब तशरीफ लाए हैं।

नाना —आने दो।

(एक खूबसूरत युवक चुस्त पजामा और फुल काला कोट पहने हुए प्रवेश करता है। नाना खड़े होकर हाथ मिलाते हुए ...)

नाना —आओ, अजीमुल्ला खां, लंदन से कब आये ?

अजीमुल्ला —कल रात को, लेकिन ....

नाना —लेकिन क्या ?

अजीमुल्ला —सरासर बदमाशी है। हमारी अपील पर किसी ने कोई तवज्जो नहीं दी। मैंने.... ...

नाना —(बीच में टोकते हुए) छोड़ो, मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी। लंदन में अनेक डलहौजी जो बैठे हैं। कम्पनी सारा हिन्दुस्तान हड़पना चाहती है, हड़प रही है। पहले किसानों को कुचला, दस्तकारों को बरबाद किया, जुलाहों के हाथ काटे, जहां जो

नहीं बिगाड़ सकते। कानून हमारे हाथ में, कमिश्नरियां हमारे कब्जे में, दौलत पर हमारा हक हो चुका है, फौजी ताकत हमारे पास है।

हमें 1834 की उस नीति का कठोरता से पालन करना है जिसमें किसी शासक के मरने पर वह किसी और को गोद न ले सके। हमें उसका राज हड़पना है। यही हमारी 'लैप्स' अर्थात् 'अपहरण' या 'हड़प' नीति है।

इसका अर्थ हमें व्यापक तौर पर समझ लेना है। हम राज्य हड़पने के लिए राज्य पर झूठे आरोप लगाकर शासकों को हटाएंगे, रिश्वतें देकर गद्दारों को अपनी ओर करके उनकी ताकत तोड़ेंगे, झूठे कानून और झूठे कागज बनाकर छलकपट से राज्य छीनेंगे, लड़ झगड़ कर राज्य हड़पेंगे। हम चाणक्य नीति पर चलेंगे। हमें पंजाब, सतारा, झांसी, नागपुर आदि सभी बचे खुचे राज्यों को हड़पकर अपने कब्जे में करना है। हमें सारा हिन्दुस्तान हड़पना है चाहे इसके लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े।

लेकिन कब्जा कर लेना ही काफी नहीं है। हमें हिन्दुस्तानियों का ऊपर का रंग तो हिन्दुस्तानी ही रखना है लेकिन उनका पहनावा बदलना है, उनकी भाषा बदलनी है उनकी तहजीब बदलनी है और उनका मजहब तक बदलना है। हमें उन्हें यूरोपीय कल्चर और इसाई मजहब में बदलना है।

याद रखो हमें इस मुल्क के किसान, दस्तकार और आम मेहनतकश को अपने घोड़ों की टापों के नीचे कुचले रखना है जो हर बगावत के असली हीरो होते हैं। हमें राजाओं और बादशाह की सल्तनतें हड़पनी हैं जिसके लिए अफसरों, फौजियों, बाबुओं, देशी व्यापारियों और बुद्धिजीवियों को ललचाना है, फंसाना है, भ्रष्ट करना है और तोड़ना है।

याद रखो—हमारी नीति 'लैप्स नीति' है, हमारी नीति को यहां की भाषा में 'अपहरण नीति' कहते हैं—जैसे 'द्रौपदी

का चीर अपहरण इसे 'हड़प नीति' कहते हैं यानि येन केन प्रकारेण दूसरों की जर-जमीन-जोरू को हड़पना।

(इतने में नेपथ्य में आवाज होती है, हम प्लासी का बदला लेंगे, हम किसानों, मेहनतकशों और वीरों के खून का बदला लेंगे! हम शहीदों के खून का बदला लेंगे।' इतने में फिर 'धांय-धांय' की आवाज फिर से चीख और धुणी।)

डलहौजी —अब आप जा सकते हैं।

अंक–२ दृश्य–१

(कानपुर के पास बिठूर में युवक नाना साहब अपने एक भीतरी कमरे में बैठा है। नाना के सर पर पेशवा पगड़ी है। गले में मोतियों की कंठी है। बल खाई मूंछों वाला यह जवान जिसकी बड़ी-बड़ी आंखों में चमक है। वह अंगरखा पहने हुए है कमर कसी हुई है और एक लम्बी तलवार पर हाथ रखे हुए है। इतने में कोई प्रहरी आकर झुककर प्रणाम करता है!)

नाना —कहो, कौन आया है?

प्रहरी —साहब, खां साहब तशरीफ लाए हैं।

नाना —आने दो।

(एक खूबसूरत युवक चुस्त पजामा और फुल काला कोट पहने हुए प्रवेश करता है। नाना खड़े होकर हाथ मिलाते हुए ..)

नाना —आओ, अजीमुल्ला खां, लंदन से कब आये?

अजीमुल्ला —कल रात को, लेकिन ....

नाना —लेकिन क्या?

अजीमुल्ला —सरासर बदमाशी है। हमारी अपील पर किसी ने कोई तवज्जो नहीं दी। मैंने... ...

नाना —(बीच में टोकते हुए) छोड़ो, मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी। लंदन में अनेक डलहौजी जो बैठे हैं। कम्पनी सारा हिन्दुस्तान हड़पना चाहती है, हड़प रही है। पहले किसानों को कुचला, दस्तकारों को बरबाद किया, जुलाहों के हाथ काटे, जहां जो

मिला लूटा, घर जलाए, औरतों और बच्चों को मारा ।
अब गोद प्रथा बंद करके राज के राज हड़प किए जा रहे
हां, लंदन में तुमने और क्या किया ?

अजीमुल्ला —लंदन में सतारा के रंगो बापू से भेंट हुई । हम दोनों ने एक
में बैठकर खूब लंबी बातचीत की । हम दोनों इस बात
एक राय थे कि हिन्दुस्तान की सारी छोटी बड़ी सल्तन
डलहौजी की नीति के तहत कम्पनी हड़प लेगी, न दिल्ल
बचेगी और न कोई और रियासत । रियाया पर खौफ़नाक
कहर ढाए जायेंगे, मजहबों को तहस-नहस कर दिया जायगा।

नाना —फिर इस सबके लिए क्या इलाज सोचा तुम लोगों ने ? क्या
ये हालात बरदाश्त कर लिए जायं ?

अजीमुल्ला —नहीं, हमने सोचा है और हम दोनों इस नतीजे पर पहुंचे हैं
कि प्लासी की साज़िश को हुए अब इस जून में पूरे सौ सा
हो रहे हैं । इस मौके को हाथ से नहीं खोने दिया जाय । हम
प्लासी की साज़िश का बदला लें ।

नाना — बात यही है अजीज़ लेकिन कैसे? क्या बापूजी से कोई चर्चा
हुई है ?

अजीमुल्ला —हां, हम सोचते है कि सारे मुल्क में एक साथ कार्रवाई हो-
किसी एक ही दिन एक साथ धमाका हो । इसके लिए आप
सबको छिपे तौर पर दस्ती चिट्ठियां भेजें । खुफ़िया
सिपाहियों को आगाह करें–किसान, दस्तकार, आम मेहन
कश, संन्यासी और फ़कीर सब मुल्क की आज़ादी के लि
जुट जायं । क्या आप इसे ठीक मानते हैं ?

नाना — दुरुस्त कहते हो भाई ! अब मैं समझा, जो हम बिठूर
बैठकर एक योजना बना रहे थे–उसी तरह तुम लंदन में सोच
रहे थे । इसके अलावा और कुछ हो भी तो नहीं सकता ।
लेकिन बापूजी अब कहां है ?

अजीमुल्ला —बापूजी मेरे से पहले हिन्दुस्तान आ गया और यहां उसने जिनसे
मिलना तय किया था उनसे मिल रहा होगा। मैं यूरोप के दूसरे
हिस्सों में चला गया था कि कहीं से मदद मिले, लेकिन सब
अपनी ही आग बुझाने में लगे हैं । हमें मु[illegible] आज़ादी

का काम खुद ही पूरा करना होगा। अब आप बताएं अपनी स्कीम कैसे बनेगी ?

नाना —स्कीम बनेगी नहीं, बन चुकी है और काम चल रहा है। हमने सबको दस्ती खत भेजकर बता दिया है कि हम किसी एक सल्तनत और किसी एक रियासत या जमात के लिए नहीं बल्कि इस समूचे एक मुल्क हिन्दुस्तान को आज़ाद करने जा रहे हैं। बहादुरशाह जफ़र हमारा बादशाह होगा और दिल्ली राजधानी। हमारा निशान हरे रंग का होगा–हरी भरी खेती के रंगवाला हरा झंडा। खुफिया तौर पर चपाती में लाल कमल होगा। सिपाहियों के लिए जग में उतरने की निशानी लाल कमल और आम आदमी के लिए हर तरह मदद करने और साथ देने की निशानी चपाती। 31 मई को सुबह 9 बजे तोप के धमाके के साथ बगावत चालू होगी। और..।

(इतने में प्रहरी आकर सम्मान सूचक सर झुकाता है।)

प्रहरी — दिल्ली से यह दस्ती खत ! (खत आगे बढ़ाते हुए)

नाना —(खत लेते हुए) कौन आया है, एक सिपाही ? उसे रोक लो। (खत पढ़ते हुए) 91 का मतलब हुआ 13 और 49 का मतलब सात ! ठीक है।
(घण्टी बजाता है, प्रहरी आता है) जाओ, उसे भेज दो।
(प्रहरी जाता है, सिपाही प्रवेश करता है)

सिपाही —(सैल्यूट देते हुए) जी हुजूर !

नाना —स-21, ज-77 और द-112। याद रखोगे न, पकड़ में मत आना।

सिपाही —जो पकड़ा गया था वह एक ही तो था हुजूर बाकी जो नहीं पकड़ में आए वे तो सैकड़ों हैं और मैं......?
अच्छा, मैं जाऊं ?

नाना —हां, होशियारी से।
(सिपाही सैल्यूट कर मुड़ जाता है)

अजीमुल्ला —(जिज्ञासु की तरह) यह तो मैं भी नहीं समझा आखिर यह माजरा क्या है साहब ?

नाना तरह के कई इशारे हैं, जिन्हें पलटनों के खास लोगों को

समझाए जा चुके हैं । बगावत की तैयारी के इशारे हैं
समझ जाओगे । हां, तुमने धन के बारे में कहा था–सो
खबर है कि संन्यासी, फ़क़ीर, मौलवी और पंडित जहां
प्रचार के लिए जाते हैं–आम लोग उनकी मंशा जानने
उन्हें गुप्त रूप से खूब पैसा देते हैं और वे सब निहायत
नदारी से आजादी के लिए बनाए खजाने में पहुंचा देते
बिठूर, दिल्ली, लखनऊ, कलकत्ता और सतारा में
खजाने हैं ।

अजीमुल्ला —और सरकारी मुलाज़िमों का क्या रुख है ?

नाना —अजीज, सरकारी मुलाजिम तो हमें दफ्तरी राज देते
अंग्रेजों के बावर्ची और भिश्ती तक हमें उनके घर के राज़
रहते हैं । अच्छा, अब छोड़ो इन बातों को और तैयार
जाओ कल चलने के लिए ।

अजीमुल्ला —कहां ?

नाना —मैं, मेरा भाई बाला साहब और, तुम तीर्थयात्री का बाना
कर दिल्ली, लखनऊ, कलकत्ता, सतारा, कालवी आदि
जगहों पर जाकर हकीक़त भी मालूम करेंगे, उनकी राय जा
और उनके सामने नक्शा रखकर हिदायतें देते चलेंगे ।
जाओ, कल की तैयारी करो ।

अजीमुल्ला —(खड़े होकर चलते हुए) बहुत अच्छा, आदाब !

नाना —(बीच में रोकते हुए) ठहरो अभी, एक बात और याद आ
गई । मुल्क की आजादी के लिए आम अवाम को तैयार करना
लाजिमी था । इसके लिए अपने लोग जगह-जगह तमाशों,
पवाड़ो, लावनियों, कठपुतलियों और ऐसे नाटकों को भी
इस्तेमाल करते हैं जिनमें आजादी के लिए बगावत करने के
इशारे भी दिए जाते है । इनमें से किसी ख्याल या रम्मत या
नाच पर नजर पड़ जाय तो उसे अपने को पहचानने की
कोशिश भी करनी है । उनके डाईरेक्टर से भी अलग से
मिलना है । इनमें हमारे निशान हैं–मोर, कोयल, नाग और
हाथी । निशान बाएं हाथ की हथेली के पीछे की ओर हरे
रंग में बहुत छोटे रूप में होगा । अजीज, किसी ऐसे शायर

को अपने साथ मिला सकते हो जो इनक़लाब के जज़्बातों को आवाम के दिलों में ताज़ा करता रहे ?

अज़ीमुल्ला — हां, हैं दो तीन शायर है जिनसे मिला दूंगा आपको। कुछ कहानी किस्से वाले भी हैं जिनको काम में ले सकेंगे। मैं सोचता हूं जब फिरंगी हिन्दू-मुसलमानों को अपने मजहब में बदलने की साजिशें कर रहे हैं तो हम भी अपने वफ़ादार सिपाहियों में से कुछ को खुफिया बनाकर उनके मजहब में मिलवा दें।

नाना —यह भी करेंगे अजीज ! मुझे एक बात और मालूम हुई कि जो नए कारतूस चार दिन पहले जारी किए थे इनमें जान-बूझ कर गाय और सूअर की चर्बी लगाई गई है और पहले जो कारतूस हाथों से तोडने पडते थे—अब उन्हें दांतो से तोड़ना पड़ेगा। यदि यह बात फैल गई या फैला दी गई तो हिन्दू और मुसलमान दोनो के दिलो में आग लग जायगी। क्या इस बारे में तुमने भी सुना है अजीज ?

अज़ीमुल्ला —हां, सुना है कि एक दिन दमदम का एक ब्राह्मण सिपाही पानी का लोटा हाथ में लिए बैरक की ओर जा रहा था। अचानक एक मेहतर ने आकर पानी पीने के लिए सिपाही से लोटा मांगा ब्राह्मण सिपाही ने लोटा देने से इन्कार कर दिया। इस पर मेहतर ने कहा—"अब जात पात का घमंड छोड़ो। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जल्दी ही तुम्हें अपने दांतों से गाय का मांस और सूअर की चर्बी काटनी पड़ेगी ? जो नए कारतूस आ रहे है, उनमें जानबूझ कर ये दोनों चीजें लगाई जा रही हैं। लेकिन साहब, इसमें हमें क्या लेना देना?"

नाना — अज़ीज, इसकी सबसे बड़ी अहमियत यह होगी कि बगावत को आग लगने के लिए जो पौरी वाकया होना चाहिए—वह इन कारतूसों से हो जायगा। माना कि सिर्फ ऐसे किसी वाकये से समूची बगावत खड़ी नहीं होती, लेकिन इस किस्म की घटना आग में घी का काम करती है। बगावत के लिए ऐसी सनसनीखेज घटना का भी अपना असर होता है।

अज़ीमुल्ला —कल को ऐसा सनसनीखेज वाकया हमारा ही कोई राज खोल दे तो हम क्या करेंगे ?

नाना — असमानीगिज तो नहीं, लेकिन हमारे साथ भी चोट हो चुकी है। इस तरह का एक खत भी अंग्रेजों के हाथ लग गया जिसमें लिखा था—'भाइयों, हम खुद अंग्रेजों की तलवार अपने शरीर के अन्दर घोंप रहे हैं। यदि हम खड़े हो जाय तो जरूर कामयाब होंगे। कलकत्ते से पेशावर तक सारा मैदान हमारा होगा।'

अजीमुल्ला — लेकिन यह हुआ कैसे?

नाना — जिसे वह कागज देना था वह किसी सरकारी दलाल से उलझ पड़ा, मारपीट हुई, उसे पकड़ लिया गया और हवालातखाने में कागज पकड़ा गया। लेकिन कागज़ के पकड़े जाते ही सिपाही ने खुदकशी करली। इस घटना के बाद हमने अपना तरीका ही बदल डाला। हां, तो अजीज़, अब कल चलने के लिए तैयार मिलूंगा। अच्छा, इजाज़त......?

(जल्दी से चला जाता है)

(नाना नक्शा खोलकर देखने लगते हैं। दूर से समवेत स्वर में यह गीत सुनाई पड़ता है):—

हिन्द के जवान आ
हिन्द के किसान आ
कदम बढ़ा! कदम बढ़ा! कदम बढ़ा!
राम आ, रहमान आ
श्याम आ, सुलतान आ
कदम बढ़ा! कदम बढ़ा! कदम बढ़ा!
मार ले अंग्रेज को
आज़ाद करले देश को
कदम बढ़ा! कदम बढ़ा! कदम बढ़ा!

(गीत खतम होते-होते पर्दा गिरता है।)

(सुनो, सुनो, सुनो! कम्पनी सरकार का ऐलान सुनो! कुछ लोग कहते हैं कि नए कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगी है। यह सरासर झूठ है। अभी हाल ही में साढ़े बाईस हजार कारतूस अंबाला डिपो से और चौदह हजार कारतूस सियालकोट डिपो से आए हैं अर्थात् साढ़े छत्तीस हजार

कारतूस हिन्दुस्तानी फौज में भेजे जा चुके। इन नये कारतूसो को जो सिपाही लेने से इन्कार करेगा, उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया जायगा। इसको लेने के खिलाफ़ जो वरगलाएगा उसे पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया जायगा।" इस ऐलान को तीन बार जोर-जोर से पढ़ा जाता है।)

अंक–२ दृश्य

(बैरकपुर के मैदान में बाईं ओर पलटन न० 19 खड़ी है। सारजेन्ट मेजर ह्यूसन निरीक्षण कर रहा है। इतने में अचानक एक सिपाही बन्दूक लिए लाइन तोड़कर सामने आ खड़ा होता है)

सिपाही —भाईयो ! हमें गाय और सूअर की चर्बी वाले कारतूस देकर हमारा अपमान किया जा रहा है। हमारा वेतन पहले से ही काटा जा चुका है, हमें अंग्रेजी राज फैलाने के लिए चीन और फ्रांस भेजा जा रहा है, अग्रेज अफ़सर हमारे साथ कुत्तो का सा सलूक कर रहे है, और अब यह हमारे मजहब पर सीधी चोट है। हम इसे बर्दाश्त नही करेंगे। उठो, जिहाद का ऐलान है।

ह्यूसन —कौन मगल पाडे ? रहमत खां, गिरफ्तार करो इसे।
(रहमत टस से मस नही होता)

ह्यूसन —अच्छा तो (किसी दूसरे की ओर इशारा करता है) तुम गिरफ्तार करो। (वह भी चुपचाप खड़ा रहता है)

ह्यूसन —तुम [illegible] भी आकर इसे गिरफ्तार कर लो !
[illegible] से नहीं हिलता)
[illegible] पलटन मे खामोश बगावत !
[illegible] -कर जाने की ओर होता है। ह्यूसन चीखकर
[illegible]
[illegible] -न कर एक दूसरा
[illegible] -न में गोली चलाता

अंक–२ दृश्य–३

(पर्दे के पीछे से एक ओर सरकारी मुनादी ढोल बजाकर दी जा रही है।
मेरठ में रहने वाले तमाम लोगो! सुनो, मेरठ के मर्दों और औरतो! कान
लगाकर सुनो, बैरकपुर में मंगल पांडे को फांसी दे दी गई और आज सुबह मेरठ
के 85 सिपाहियों को गिरफ्तार कर उन्हें दस साला सजा भुगतान के लिए जेल के
सीखचों में बन्द कर दिया गया। मंगल पांडे और मेरठ के जवानों का कसूर यही
था कि उन्होंने गाय और सूअर की चर्बी से बने कारतूसों को इस्तेमाल करने से
इनकार कर दिया। कम्पनी सरकार के अत्याचार कब तक सहोगे। ये सिपाही
हम किसानों, दस्तकारों, जुलाहों और आम अवाम के ही तो बेटे हैं। ये भारत
माता के बेटे हैं। मेरठ वालों, उठो आजादी का नगारा बज चुका है। हम सब

मस्त भाई ! 'हम सब मस्त भाई ।' और फिर नगाड़े पर चोट पड़ती है।
ऐलान एक बार और दोहराया जाता है।)

(कुछ सिपाही मंच पर आते हैं और कोने में सलाह-मशविरा कर रहे हैं।)

सिपाही 1 —जानते हो फिरंगियों ने शहर के हमारे कुछ भाई सिपाहियों को देखते ही क्या ताना मारा कि तुम्हारे भाई जेलखाने में हैं और तुम यहां बाजार में मक्खियां मार रहे हो ! तुम्हारे जीने पर धिक्कार है।

सिपाही 2 —लेकिन अब हमें आज ही फैसला करना होगा कि कल हमें क्या करना है। (सिपाही नं 3 से) अबे, बोलता क्यों नहीं कि हमें क्या करना है ?

सिपाही 3 —तुम तो हो निरे बुद्धू ! तुम्हें मालूम नहीं कि सिपाहियों, शहरवालों, गांव वालों और पंडित-मुल्लाओं की मीटिंग कहीं गुप्त जगह बैठकर 2 घण्टे से फैसले पर विचार कर रही है। हमारे आदमी वहां बैठे हैं-वे फैसला होते ही ऐलान कर देंगे। अब आजादी की लड़ाई चालू हो गई है। यह लड़ाई किसी एक की थोड़े ही है-यह तो जंग-ए-आजादी है-सिपाही किसान स्त्री, पुरुष, कलमकार यानि कि यह अवामी बगावत—जन-जन का विद्रोह !

सिपाही 1 —छावनी में चलो, कुछ तैयारी करें और हो सकता है कि फैसला हो ही चुका हो।

(इतने में जोरों से आवाज आती है—'दीन! दीन!' 'हर हर महादेव !' 'जेल के फाटक तोड़ दो ।' 'फिरंगी को मार भगाओ!' 'रेलों पर कब्जा करो!' मेरठ आजाद हो—आजाद हो !' 'हिन्दुस्तान आजाद हो!' इसके साथ ही बंदूकों की धाय-धाय की आवाज, आग की लपटें, 'आह! ओह!' की चीख मंच पर जन समूह नारे लगाते हुए दिखाई देता है-इतने में एक व्यक्ति सैनिक कमांडर की पोशाक में दिखाई देता है उसके हाथ में हरा झंडा है और एक हाथ में बंदूक।)

कमांडर —(झंडा ऊपर उठाते हुए) भाइयो ! मेरठ के बहादुर जवानों और नागरिकों ! आपको मुबारकबाद ! हम जेल से भाइयों को रिहा करवा लाए हैं। फिरंगियों को मार या मेरठ

—चलो, हमें इस महा अभियान के दिल्ली पहुँचने से पहले ही पहुँचना है। घोड़े तैयार खड़े हैं।

(तीनों चले जाते हैं। घोड़ों के दौड़ने की आवाज़ पर्दे के पीछे से आती है। इधर नारों की आवाज़ सुनाई पड़ रही है।)

(पर्दा गिरता है)

अंक–२ दृश्य–४

(दिल्ली दरबार लगा है। दो शाही तख्त सामने रखे दिखाई दे रहे हैं। [illegible]के पीछे पर्दे पर हरा झण्डा दिखाई दे रहा है। कतार में नाना साहब, अजी-[illegible]ल्ला, बाला साहब, अपने शाही वेश मे, फौजी कमांडर, और वाईं ओर रुहेलखंड [illegible]खान बहादुर खां, बख्तखां दिल्ली का (सेनापति), इलाहाबाद का सूबेदार [illegible]यािकतअली, झांसी का हवलदार गुरुबख्श सिंह बैठे हैं। इतने मे दरबान की [illegible]वाज सुनते ही सब सावधान हो जाते हैं।)

[illegible]रबान —बाअदब बामुलाहिज़ा होशियार! हिन्दुस्तान के जहांपनाह शहंशाह बहादुरशाह जफर और मलिका-ए-आलम जीनत महल तशरीफ़ ला रहे है। (इसी वाक्य को एक बार और दोहराया जाता है सब खड़े हो जाते हैं और बादशाह बहादुरशाह जफर और मलिका जीनत महल प्रवेश करते हैं। सब झुककर सलाम करते हैं और बादशाह और बेगम हाथ खड़ा करते हैं और क्षण भर सबको ध्यान से देखने के बाद आसनों पर बैठ जाते हैं, उनके बैठते ही सब बैठ जाते हैं।)

बहादुरशाह —भाइयो! हमने एक ऐलान जारी किया था जिसमे कहा था– 'ऐ हिन्दुस्तान के फरजन्दो! अगर हम इरादा कर लें, तो बात की बात मे दुश्मन का खातमा कर सकते हैं। हम दुश्मन को नेस्तनाबूद कर डालेंगे और अपने मजहब और मुल्क को, जो हमे जान से भी ज्यादा प्यारे है, खतरे से बचा [illegible]

बख्त खां —(खड़े होकर सलाम करते हुए) जहाँपनाह! यह फरमान सब जगहो पर सादा कर दिया गया। इसका बहुत [illegible] असर हुआ। मेरठ और दिल्ली के बाजार [illegible] दूर-दूर फैल गया है।

बहादुरशाह — तौबा तौबा ! खुदा मेहर करे । हवलदार गुरबख्शसिंह, झांसी के क्या हाल है ?

गुरबख्शसिंह — झांसी आबाद है और जब तक हमारी जवां मर्दों की हिम्मत रखने वाली और मददगारियों वाली मां दुर्गा के समान दुश्मनों की बोटियों को गिनने वाली रानी लक्ष्मीबाई के हाथ में तलवार रहेगी झांसी पर अंग्रेज पैर रखने की भी हिम्मत नहीं करेगा ।

जीनत महल — सच ! रानी औरत होते हुए भी इतनी तेज है ?

गुरबख्शसिंह — हकीकत है मलिका-ए-आलम ! सारी रियासत में ढिंढोरा पिट गया है कि 'खल्क खुदा का, मुल्क बादशाह का, हुकम रानी लक्ष्मीबाई का ।'

बहादुरशाह — और कानपुर के क्या हाल है नाना साहब ?

नाना — बादशाह सलामत ! कानपुर ने जहांपनाह बहादुरशाह 'जफर' को सबसे पहले 101 तोपों की सलामी दी, फिर 21 तोपों की सलामी पेशवा नाना को, जो आपकी खिदमत में है । मैंने सिपाहियों को और साथ ही आम अवाम को अपना शुक्रिया अदा किया क्योंकि हमारी सारी कामयाबियों के सेहरे का असली हकदार तो अवाम ही है । जहांपनाह ! जंगे आजादी अवामी जंग ही होता है—जन संग्राम ! कानपुर पर इस समय हरा निशान लहरा रहा है शहंशाह !

जीनत महल — अजीमुल्ला खां, तुम क्या सोच रहे हो ?

अजीमुल्ला — हमारे कानपुर की हिन्दू और मुसलमान औरतों ने घरों से बाहर निकल कर गोला बारूद इधर से उधर ले जाने, सैनिकों को भोजन पहुंचाने और ठीक अंग्रेजों किले की दीवार के नीचे तोपचियों को मदद देने का काम जिस फुर्ती से किया वह अपने आप में बहादुरी की मिसाल थी । इन औरतों में मलिका-ए-आलम एक कानपुर की मशहूर तवायफ अजीजन भी थी जो तलवार लिए घोड़े पर बिजली की तरह शहर की गलियों और छावनी के बीच दौड़ती फिरती थी । कभी वह गलियों के अन्दर थके हुए और घायल सिपाहियों को दूध और मिठाई बांटती थी और कभी लड़ने वालों के बीच में जं [illegible] तकरीर देकर उनके हौसले बढ़ाती थी ।

बहादुरशाह — (जीनत से) देखा मलिका-ए-आलम ! मौका पड़ने पर औरतें कितनी बहादुरी से आगे बढ़ती है।

जीनत महल —जहांपनाह ! अमन होने पर हमें ऐसी औरतों का खैर मक्कदम करना चाहिए।

बहादुरशाह —बेशक ! हमें जंगे आजादी के लिए जहां लाजवाब बहादुरी के लिए झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और तांत्या टोपे का खैर-मककदम करना है वहां इसमें हिस्सा लेने वाली आम अवाम जिसमें बहादुर आदमी और औरतें और अजीजन जैसी निहायत वफादार तवायफ भी शामिल हो—खैरमकदम करना है। हमारा आज का मकसद है अपनों से प्यार और फिरंगी से सख्त से सख्त नफरत करना। कमांडर, जो खत जारी करने के लिए हमने खुद अपनी कलम से लिखा है उसे सबको सुनादो — अगर तरमीम करने को कोई बात हो तो उसे भी उसमें जोड़ दिया जाय।

कमांडर — (खत का मसौदा पढ़ता है)—यह खत जहांपनाह ने जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, अलवर, भरतपुर और दूसरी कई रियासतों को भेजने के लिए तय किया है। खत का मजमून यह है)—

"मेरी यह दिली ख्वाहिश है कि जिस जरिए से भी और जिस कीमत पर भी हो सके, फिरंगियों को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल दिया जाय। मेरी यह जबरदस्त ख्वाहिश है कि तमाम हिन्दुस्तान आजाद हो जाय। लेकिन उस मकसद को पूरा करने के लिए जो इन्कलाबी जंग शुरू कर दिया गया है, वह उस वक्त तक फतहयाब नही हो सकता, जब तक कि कोई ऐसा शख्स, जो तमाम तहरीक के भार को अपने ऊपर उठा सके, जो कौम की मुख्तलिफ ताकतों को एक जुट करके एक ही तरफ लगा सके और जो अपने तई तमाम की नुमाइन्दगी कर सके, मैदान में आकर इस हंगामी जंग की रहनुमाई अपने हाथों में न ले ले। अंग्रेजों के निकाल दिए जाने के बाद अपने जाती फायदे के लिए हिन्दोस्तान पर हुकूमत करने की मुझमें जरा भी ख्वाहिश बाकी नहीं है। अगर सब देशी नरेश दुश्मन को निकालने की गरज से अपनी अप-

तजवीज़ सोचने के लिए तैयार हों, तो मैं इस बात के लिए राज़ी हूँ कि अपने तमाम शाही अख्तियारात और हुकूक देशी नरेशों की किसी ऐसी जमात के हाथों सौंप दूं, जिसे इस काम के लिए सबके ज़रिए चुन लिया जाए।'

दुरशाह —क्यों, आप सबको मेरी यह तजवीज़ मंज़ूर है?

ब —(एक स्वर में) मंज़ूर है जहाँपनाह!

दुरशाह —और कमांडर साम बख्त तक हमारा यह पैगाम भी पहुंचा दो—'हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और मुसलमानों, उठो, भाइयो उठो! खुदा ने जितनी बरकतें इन्सान को अता की हैं, उनमें सबसे कीमती बरकत 'आज़ादी' है। फिरंगियों ने इतने जुल्म किए हैं कि उनके गुनाहों का प्याला लबरेज़ हो चुका है, जंगे आज़ादी आगे बढ़ चुका है। इस मौके पर जो कोई बुज़दिली दिखलाएगा या भोलेपन के कारण दगाबाज़ फिरंगियों के वादों पर ऐतबार करेगा या इंग्लिस्तान के साथ अपनी वफ़ादारी दिखाएगा, उसे उसका भुगतान करना होगा। इस जंग में तमाम हिन्दू और मुसलमान मिलकर काम करें और अपने रुपैलपाए रहनुमा की हिदायतों पर चल कर इस तरह का बरताव करें जिससे अमनो अमान कायम रहे और गरीब लोग खुशहाल रहें, और उनका रुतबा और उनकी शान बढ़े।"

अब आप अपने अपने काम को अंजाम देने के लिए तशरीफ़ ले जाएं। खुदा हाफ़िज़!

(शहंशाह और मलिका खड़े हो जाते हैं। साथ में सभी खड़े होकर एक [illegible] "अमनोअमान और खुशहाली के लिए शहंशाह सलामत रहें।" शहंशाह दुरशाह और जीनत महल चले जाते हैं। और इसके बाद सभी चले जाते हैं। र्दा गिरता है।)

अंक—२ दृश्य—५

(लार्ड कैनिंग कुर्सी पर बैठा है। पर्दे के एक तरफ़ हिन्दुस्तान का नक्शा हुआ है। एक ओर की लाइन में गवर्नर बैठे हैं—पंजाब, बम्बई और मद्रास । बाईं लाइन में कमांडर इन चीफ़ कालिन कैम्पबेल और जनरल हैवलॉक हैं।)

—गो जीत के लिए मैं पंजाब के गवर्नर को सबकी ओर से

सचिव —(फाइल से रिपोर्ट पेश करते हुए) इस रिपोर्ट के मुताबिक अब कोई हिस्सा बागियों के कब्जे में नहीं रहा। मिरजा इलाहीबक्श ने विश्वासघात करके जबसे बहादुरशाह 'जफर' को गिरफ्तार करवाया उसके बाद दिल्ली पर हमने तुरन्त कब्जा कर लिया। हमने बहादुरशाह के शहजादे मिरजा मुगल और मिरजा अख्जर सुलतान और पोते मिरजा अबूबकर के सिर काट कर गिरफ्तार बहादुरशाह को एक थाल में रखकर भेंट किए और कहा कि—"कम्पनी की ओर से यह आपका नजराना है जो बंद पड़ा था।" इस पर उस बूढ़े गिरफ्तार बादशाह बहादुरशाह ने उन्हें देख कर कहा—

"अलहम्दोलिल्लाह ! (यानी खुदा की तारीफ है!) तैमूर की औलाद ऐसे ही सुर्खरू होकर बाप के सामने आया करती थी।"

मि. लार्ड ! इस रिपोर्ट के अनुसार हमने दिल्ली में जो भी मिला उसको कत्ल कर दिया। अब दिल्ली में सिवा हमारी फौज के और कोई भी नहीं है।

कैनिंग —अब हमें सम्राज्ञी विक्टोरिया का यह ऐलान हिन्दुस्तान भर में प्रचारित करना है। (ऐलान का पत्र निकाल कर पढ़ता है)—

"पहली नवम्बर 1858 ई. से कम्पनी का राज समाप्त हुआ और उसके स्थान पर हिन्दुस्तान के शासन की बागडोर हमने (अर्थात् सम्राज्ञी विक्टोरिया ने) अपने हाथों में ले ली है। सिवाय उन लोगों के, जो हमारी अंग्रेजी प्रजा की हत्या में भाग लेने के अपराधी हैं, बाकी जो लोग भी हथियार रख देंगे, उन सबको माफ कर दिया जायगा. हिन्दुस्तानियों को गोद लेने की प्रथा आइन्दा से जायज समझी जायगी और पुत्रों को पिता की जायदाद और गद्दी का मालिक माना जायगा, किसी के धार्मिक विश्वास या धार्मिक रीति रिवाजों में किसी तरह का हस्तक्षेप न किया जायगा, देशी नरेशों के साथ कम्पनी ने इस समय तक जितनी संधियाँ की हैं, उनकी सब शर्तों का आइन्दा ईमानदारी के साथ पालन किया जायगा, सब भारतवासियों के साथ ठीक उसी तरह का व्यवहार किया जायगा, जिस तरह अंग्रेजों के साथ।"

इस ऐलान को लाखों में छपवाकर बटवा दिया जाय और जितना ज्यादा ढिंढोरा पीटा जा सके पिटवा दिया जाय।

कैम्पवेल — मि. लार्ड, इस गदर से इन बेवकूफ हिन्दुस्तानियो को सिवा खून खराबे के और शिकस्त-दर-शिकस्त के और क्या चीज हासिल हुई ?

कैनिंग —एक बहुत बड़ी चीज हासिल हुई है कैम्पवेल,–बहुत बेशकीमती चीज। इस हिन्दुस्तान के किसानो ने हिन्दुस्तान की आजादी के जग के इतिहास का निर्माण चालू कर दिया है। सन् 1757 से जो जगे आजादी की शुरूआत यहा के किसानों और दस्तकारों ने की थी—उसे हम सौ सालो की कोशिशो के बावजूद नही मिटा सके। उल्टे यहा के किसान के बेटे सिपाहियो और आम मेहनतकश इन्सानो ने अपना खून बहाकर इस सारे मुल्क को एकबारगी न केवल आजाद ही करवाया, बल्कि यह साबित भी कर दिया कि वो कितनी बहादुरी और चतुरता के साथ लड सकते है। हम अपने नजरिये से आज इसे चाहे गदर कहे, लेकिन यहा के लोग इसे स्वतन्त्रता का महान जन-सघर्ष कहेगे। भारत के इतिहास का यह रक्त रंजित अध्याय आजादी की आग को कभी नही बुझने देगा। इससे बड़ा और क्या लाभ हो सकता है और यही वह अध्याय होगा जो ब्रिटेन पर लगे कलक को कभी न मिटने देगा। कैम्पवेल, यह बगावत हिन्दुस्तानियो की जीत है और....और हम अंग्रेजो की न लौटायी जा सकने वाली हार !

(पर्दे के पीछे से समवेत स्वर मे आवाज सुनाई देती है–'विक्टोरिया का ऐलान धोखा है' 'अवध का जग जारी है' 'जगे-आजादी जारी है–जगे आजादी जारी है–जगे आजादी जारी है'—कैनिंग और बैठे हुए सभी झुंझलाकर उठते है। उनके चलते जाने की क्रिया के साथ पर्दा गिरता है।)

अंक–३ दृश्य–१

(विद्यालय के एक कमरे में एक ब्लैक बोर्ड खड़ा है। एक टेबल के पीछे एक कुर्सी पर सफेद कुर्त्ता धोती पहने एक शिक्षक बैठा किताब पढ़ने में लगा हुआ है। पर्दे के पीछे से एक आवाज आती है – हिन्दुस्तानियों ! तुम्हारे बुजुर्गों ने 1757 की प्लासी की साजिश का बदला लेने के लिए खून दिया। 1857 के विशाल जन विद्रोह में आज़ादी के लिए कितने ही बलिदान दिए तुम्हें अपने बुजुर्गों के खून की कसम, तुम्हें असंख्य देशभक्त लोगों के बलिदान की कसम, जगी आज़ादी की मशाल को बुझने न देना ! तुम्हें अपने भाइयों के हृदय का खून पीकर मोटे होनेवाले इन घृणित राक्षस अंग्रेजों से बदला लेना है। इन्होंने हमारे गरीब भाइयों, ईमानदार मेहनतकशों और किसानों की मेहनत की गाढ़ी कमाई पर डाका डाला है। उठो, कमर कसो, गुलामी की जिन्दगी के जीने से मौत लाख गुना बेहतर है। आज़ादी की मशाल बुझने न पाए। आज़ादी की मशाल बुझने न पाए ! आज़ा[illegible] की मशाल बुझने न पाए !!)

शिक्षक —नहीं, आज़ादी की मशाल कभी न बुझने पाएगी, कभी न बुझने पाएगी।

(इतने में किसान नेता प्रवेश करता है)

किसान नेता —क्या बात है गुरु जी ! अकेले ही किससे बात हो रही है ?

शिक्षक —(चमककर) आओ भाई! जाने कौन कह रहा था कि आज़ादी की मशाल बुझने न देना।

किसान नेता —तुम्हीं तो कह रहे थे ! खैर जाने दो ! मुझे तो यह कहना है कि आपको तो हम किसानों के हथियारबन्द मुकाबलों का पता ही है। [illegible] हम किसान ही सबसे ज्यादा अंग्रेजों के खिलाफ लड़े हैं। अब आप पिछली सारी कड़ियों को जोड़ते हुए नील विद्रोह, [illegible] विद्रोह, [illegible] विद्रोह, [illegible] का दंगा, [illegible] विद्रोह, [illegible] के किसान विद्रोह, महाराष्ट्र के किसानों का [illegible], [illegible] के नेतृत्व में विद्रोह और [illegible] विद्रोह के बारे में लोगों को समझाओ।

शिक्षक —मैं [illegible]

जहाँ 3 करोड़ लोग अकाल में भूख से मर गये और
लाख लोग हैजे और प्लेग से मर गये; किन्तु फिर भी
जालिम अंग्रेजी हुकूमत टैक्स, लगान, लड़ाइयों के खर्च,
पेंशनें, ऐय्याशी करने के लिए रिश्वतें, रेलों के लाभांश आदि
के रूप में वसूल कर रही है जिसे देखकर मेधावी मार्क्स भी
लंदन में बैठा तिलमिला उठा है। मार्क्स ने कहा है—'यह तो
खून निचोड़नेवाली बात है। यह तो हृदय विदारक है।' तब
क्या भारत का लेखक नहीं तड़प उठेगा ?

भारती —भारतेन्दु ही क्यों बंगला, उर्दू, मराठी, गुजराती और पंजाबी आदि सभी भाषाओं के कवियों, लेखकों और नाटककारों ने तूफ़ान खड़ा कर रखा है।

(पांच व्यक्तियों–छात्रनेता, महिला, मजदूर नेता, राजनीतिज्ञ और वकील का प्रवेश)

शिक्षक —आइये पंच परमेश्वर जी, आपके देरी से आने का स्वागत है

महिला —देरी तो दरअसल हुई, लेकिन उसका कारण तो आपने पूछा ही नहीं ?

शिक्षक —अच्छा, जाने दो! अब अपने को काम शुरू कर देना चाहिए। सबसे पहले हम सब 'वन्देमातरम्' गाएंगे।

(सब एक साथ गाते हैं)

"वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां मातरम्॥
वन्दे मातरम् .. .. .
कोटिकोटिकण्ठ–कलकल निनादकराले,
कोटिकोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बोले मां तुमि अबले ?
बहुबलधारिणीम् नमामि तारिणीम्;
रिपुदलवारिणीम् मातरम्॥ वन्दे ....

तुमी विद्या, तुमी धर्म,
तुमी हरि, तुमी कर्म,
त्वं हि प्राण शरीरे।
बाहुते तुमी मा शक्ति,
हृदये तुमी मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ी मन्दिरे-मन्दिरे।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी,
कमला कमल-दल-विहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वां
नमामि कमलां, अमलां, अतुलाम्,
सुजलां, सुफलां, मातरम्
वन्दे मातरम् ॥
श्यामलां, सरलां सुस्मितां, भूषिताम्
धरणीं, भरणीं मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ......"

मजदूर नेता —सबसे पहले हम शहीदों को याद करना है!

शिक्षक —जंगे आजादी के शुरू से लेकर आज तक जिन वीरों ने अपना बलिदान दिया है उन शहीदों को हम श्रद्धांजलि अर्पित करते है और संकल्प लेते है कि देश को स्वतन्त्र करने के लिए हम उन्हीं के पद-चिह्नों पर चलकर अपने प्राणों की आहुति देंगे!

(सब दो मिनट मौन रहते है)

शिक्षक —बैठिए! अच्छा, वकील साहब आप बताइए कि हमारा आंदोलन किन-किन धाराओं में प्रवाहित है?

वकील —मेरे ख्याल में कर विरोधी आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, सिविल सर्विस आंदोलन, वहाबियों और गायकवाड़ के मुकदमे से सम्बन्धित आंदोलन, राष्ट्रीय शिक्षा के लिए आंदोलन, साहित्यकारों का प्रचार आंदोलन, स्थानीय स्वायत्त शासन सम्बन्धी आंदोलन, किसानों के संघर्ष, मेहनतकश अवाम का आक्रोश आदि सभी धाराएं राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में मिलकर उसका एक स्वरूप बना रही हैं।

शिक्षक —ठीक कह रहे हैं। इन आंदोलनों की एक प्रेरक शक्ति वह राष्ट्रीय परिस्थिति है जिसमें अंग्रेजी राज द्वारा किए जाने

वाले शासकों का अत्याचार, दमन, शोषण और उत्पीड़न एक ओर है तो दूसरी ओर हम लोगों में अत्याचार के विरुद्ध, उपनिवेशवाद के विरुद्ध शांतिपूर्ण और गैरशांतिपूर्ण दोनों तरीकों से जूझने की ताकत और साहस जाग्रत है। अब तो हमने भी छोटे-छोटे संगठनों को मिलाकर एक राष्ट्रव्यापी संगठन भी बना लिया है जिसका नाम है भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस। इस कांग्रेस में सुधारवादी, नरम और गरम तीनों किस्म के नेता हैं।

वकील —हमारे इस राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम को प्रभावित करने वाली कुछ अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएं भी हैं, जैसे इटली-अबीसीनिया युद्ध, बोअर युद्ध, बॉक्सर विद्रोह, युवा तुर्क क्रांति आदि और प्रेरित करने वाली घटना है रूस में जारशाही को नेस्तनाबूद करने वाली रूसी क्रांति। इसी मायने में हम कह सकते हैं कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् यह सारी दुनिया हमारा परिवार है।

छात्र नेता —यों तो ठीक है, लेकिन हम इन उपनिवेशवादियों को अपना परिवार थोड़े ही बना लेंगे। क्या कर्जन हमारे परिवार का सदस्य हो सकता है?

शिक्षक —नहीं, कभी नहीं। जो अंग्रेज हुकूमत 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर चलती है उससे नफरत करना हमारा सबसे बड़ा फर्ज है। लार्ड कर्जन ने नगरपालिका के अधिकार छीन लिए, भयंकर अकाल के समय शान-शौकत लिए दिल्ली दरबार किया, यूनिवर्सिटी एक्ट लागू कर विश्वविद्यालयों के अधिकार छीने, तिब्बत पर आक्रमण किया और सबसे खतरनाक काम बंगाल का विभाजन करके किया—एक बंगाल हिन्दुओं का और दूसरा बंगाल मुसलमानों का। इस बंग भंग ने सारे हिन्दुस्तान में आग लगा दी है।

मजदूर नेता —बंग भंग नहीं होने देंगे। यदि बंग भंग होता है तो दूसरे प्रदेशों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जायेंगे और यों करके सारा देश फिरकापरस्ती में डूब कर तहस नहस हो जायगा। नहीं, हम ऐसा कत्तई नहीं होने देंगे।

किसान नेता —हां, तुम ठीक कहते हो भाई, हम मेहनतकश किसान, मजदूर

के रहते हुए देश के टुकड़े नही होने देंगे चाहे हमें खून की नदियां ही क्यों न बहानी पड़े ।

महिला नेता —हम देश की हरेक औरत रणचण्डी होगी । रानी झांसी के खून का बदला लेगी हम । हम देश की अखंडता की रक्षा में अपनी जान कुरबान कर देंगी । मां काली के होते कोई बगाल की तरफ आख उठाकर तो देखे–वह जिन्दा बचकर नही जा सकेगा ।

छात्र नेता — आज दुश्मन ने जवानों को ललकारा है–हम उसे मजा चखा देंगे । कभी नहीं होगा बंग भंग ।

वकील —भाइयों, खाली जोश से कुछ नही होगा । हमे योजनाबद्ध रणनीति तैयार करनी होगी ।

शिक्षक —वह सब तैयार हो चुकी है । सब जगह संग्राम-समितियां बन चुकी हैं । भूमिगत और बाहर की रणनीतियां तय की जा चुकी हैं । उस दिन राष्ट्रीय शोक दिवस का आयोजन करना, 'वन्दे मातरम्' के साथ प्रदर्शन, गंगातट पर बलिदान देने की शपथ, उपवास, गद्दारों का बहिष्कार, हड़ताल, बायकाट, विदेशी कपड़ों की होली, गुप्त सभाए, हथियार बंद जंग की तैयारी । वालंटियर्स पीली पगड़ी और लाल कमीज पहनेंगे । कल आपके पास अलग-अलग कार्यक्रम पहुंच जायगे । आज की रात अपने अपने दलों के नेताओं से सम्पर्क करके उन्हें अच्छी तरह सावधान करदें । अच्छा साथियो, वन्दे मातरम् । समवेत स्वर मे–वन्दे मातरम्! वन्दे मातरम्! वन्दे मातरम्!

(पर्दा गिरता है ।)

अंक–३ दृश्य–२

(अदालत का कमरा । गोरा मजिस्ट्रेट मंच की कुर्सी पर बैठा है । पास में फाइलें लिए गोरा सिविल अधिकारी बैठा है । गोरा पुलिस अधिकारी, स्कूल इन्स्पेक्टर और सी.आई.डी इन्सपेक्टर एक पंक्ति में और हैड क्लर्क, रेकार्ड क्लर्क और स्टेनो दूसरी लाइन में बैठे है । दरवाजे पर हथियार बंद सिपाही खड़ा है ।)

मजिस्ट्रेट —अदालत में काम के मामले लेने से पहले मैं यह जानना चाहता हूं कि बंगाल का बांटने का एक मामूली सी बात को

इंस्पैक्टर —वैसे यह बात आप गुप्तचर विभाग से मालूम कर सकते हैं। *मैं सिर्फ यह कह सकता हूं कि असली नेता तो आम अवाम* ही है जिसमे गावों के किसान, शहरी मजदूर, लेखक, कवि, अध्यापक, छात्र आदि। फिर भी इनमें आशुतोष चौधरी, रासबिहारी घोष, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, चितरंजनदास, अब्दुल रसूल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, विपिन चन्द्रपाल, बाल गंगाधर *तिलक, सुब्रह्मण्यम अय्यर, जयपाल, श्रीमती केतकर, लाला* लाजपतराय, मदनमोहन मालवीय, गोपालकृष्ण गोखले, दादा भाई नौरोजी, फीरोजशाह, अरविंद घोष आदि के नाम हैं।

मजिस्ट्रेट —भीतर और बाहर के लोग भी होंगे क्यों सी. आई. डी. इंस्पैक्टर ?

(नेपथ्य में आवाज आती है—'वंदेमातरम् ! वंदेमातरम् ! वंदेमातरम् !' '1757 का बदला-ले के रहेंगे !' 'स्वदेशी आंदोलन–जिन्दाबाद !' 'बंग भंग-मंजूर नहीं, मंजूर नहीं, मंजूर नहीं !' 'बंग भंग–नहीं होगा, नहीं होगा।' इतने में गोलियाँ चलने की आवाज ! फिर 'आह ! ओह !' की चीख और शांति !)

सी.आई.डी. इंस्पैक्टर— *(खड़े होकर सूची हाथ में लिए) यों तो सर, सुधारवादी, राष्ट्रवादी, नरमदली, गरमदली और आतंकवादी सभी मिल-* जुल गए है। अभी जो इन्होंने नाम लिए उनके अलावा मदनलाल धींगरा, बारीन्द्र घोष, चापेकर बन्धु, रानाडे, सावरकर, कन्हारे, कर्वे, देशपांडे, बापट, अनुशीलन समिति के नेता, सिस्टर निवेदिता, प्रमथनाथ मित्र, अविनाश भट्टाचार्य, भूपेन्द्रनाथ दत्त, खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी, कन्हाईलाल दत्त, सत्येन्द्रनाथ बोस, यतीन्द्रनाथ मुखर्जी, लाला हरदयाल, अजीतसिंह, शचीन्द्र सान्याल, कामाख्या बाबू, श्रीकृष्ण सारडे, अर्जुनलाल सेठी, बारहठ केसरीसिंह, राव गोपालसिंह, प्रताप सिंह, वांची अय्यर, मैडम कामा, श्यामजी कृष्ण वर्मा, एस. आर. राना, वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय, तारकनाथदास, बरकतुल्ला, मौलवी ... स्पूराग, माइकल एच. पिंचिन, जार्ज फ्रेडेन, रामनाथ पुरी, खेमेन्द्रचन्द्र, मास्टर अमीरचन्द

मजिस्ट्रेट —बस, बस, बन्द करो फाइल को ! जहां आर्य समाज औ
विवेकानन्द भी संन्यास का धन्धा छोड़कर प्रचारक बन ग
यहां चोरों का क्या कहना ? हमने इनमें से कितनों को फां
के फंदे में झुलाया, कितनों को गोली से उड़ाया और कितन
की पिटाई करके लम्बी-2 सजाएं देकर जेल भेजा ! लेकि
आए दिन मरने-मारने वाले लोग नए सिरे से पैदा हो रहे हैं।
इधर सारे बंगाल में आग लगी है तो उधर संयुक्त प्रदेश के
23 जिले, मद्रास के 13 जिले, पंजाब के 20 जिले, मध्यप्रदेश
के 15 शहर, और बम्बई के 24 शहरों में बगावत की लपटें
उठ रही हैं। (घंटी बजाता है। चपरासी आता है।)
भेज दो जिसको पकड़ कर लाए हो।

(चपरासी जाकर तुरन्त एक सिपाही के साथ आता है
वह 10 साल के एक लड़के को पेश करता है।)

मजिस्ट्रेट —इसने क्या किया है ?

सिपाही — यह लड़का अपने घर में रसोईघर में 'वंदे मातरम्' गा
था जिसकी आवाज़ बाहर सुनाई दे रही थी।

मजिस्ट्रेट —क्यों बे, तू 'वन्देमातरम्' गा रहा था ?

लड़का —हां, मैं गा रहा था ऐसे (गाता है 'वंदेमातरम्')

मजिस्ट्रेट —(बीच में टोककर) ले जाओ। इसके दस कोड़े लगादो।

(नेपथ्य में कोड़े लगने और साथ ही 'वंदे मातरम्' त
तीन बार आवाज के बाद चुप्पी)

मजिस्ट्रेट — (घंटी बजाता है) सिपाही एक दूकानदार को पकड़कर लाता
है।) इस दूकानदार ने क्या किया ?

सिपाही —हुजूर, इसकी दूकान पर बगावत का पोस्टर चिपका हुआ था?

मजिस्ट्रेट —क्यों बे, पोस्टर था ?

दूकानदार —हां, पोस्टर लगा था, लेकिन यह कोई गुनाह थोड़े ही था।

मजिस्ट्रेट —ठीक, ठीक—इसे 25 कोड़े लगाओ !

(सिपाही ले जाता है और कोड़े लगाने की आवाज़ के
साथ चीख और फिर चुप्पी)

(घंटी बजती है, एक बूढ़े को पकड़कर हाजिर किया
जाता है।)

इसका कसूर ?

सिपाही — यह गा रहा था—'पगड़ी सम्भाल जट्टा, पगड़ी सम्भाल वे !'

मजिस्ट्रेट — क्यों बे बूढ़े यह गाना गा रहा था ?

बूढ़ा — बाहर जो गा रहे हैं ?

(पर्दे के पीछे से आवाज आती है—

पगड़ी सम्भाल जट्टा, पगड़ी सम्भाल वे !
लुट गया माल तेरा लुट गया माल वे
मांझे दे जोर नाल, मालवे दे शोर नाल
कदी नइयो हार वे ?-पगड़ी सम्भाल)

मैं भी यही गा रहा था !

मजिस्ट्रेट — ले जाओ 15 कोड़े लगाओ !

(सिपाही ले जाता है, पर्दे के पीछे कोड़े लगने की आवाज के साथ 'पगड़ी सम्भाल जट्टा !' की दो बार आवाज और फिर चुप्पी)

(घंटी बजाता है। सिपाही एक जवान आदमी को लाता है)
यह क्या करता था ?

सिपाही — हुजूर इसने सम्राट की मूर्ति के चेहरे पर कालिख पोत दी।

मजिस्ट्रेट — क्यों तूने ऐसा किया ?

जवान — हम उसे सम्राट नहीं मानते !

मजिस्ट्रेट — 50 कोड़े और 2 साल की सख्त कैद !

(सिपाही ले जाता है, कोड़े मारने की आवाज के साथ 'वन्देमातरम्' के तीन नारे और फिर चुप्पी)

(घंटी बजाता है और कहता है—'एक साथ कइयों को ले आओ ! सबको एक ही रोग है।)

सिपाही — (चार आदमियों को एक साथ लाते हुए) हुजूर, यह नाई है जिसने अंग्रेजों की हजामत करने का बायकाट किया है और इसके साथ सभी ने ऐसा किया है। (दूसरे की ओर संकेत करके) यह धोबियों को बायकाट के लिए भड़काता है और स... के कपड़े धोने का बायकाट किया है। (तीसरे

(सिपाही ले जाता है। कोड़ों की मार के साथ 'वंदेमातरम्' के नारे और चुप्पी)

(घंटी बजती है 2 अध्यापक और 5 छात्र लाए जाते हैं।)

सिपाही —ये दो अध्यापक और ये छात्र हैं, जो नंगे पांव स्कूल जाते हैं उन्होंने बूटों और जूतों का बायकाट किया है।

मजिस्ट्रेट —इनके पैरों को नपने लोहे में बांध दो और 2-2 साल की सख्त कैद।

(वे ले जाए जाते हैं)

(घंटी बजती है।)

सिपाही —(5 छात्रों को पेश करते हुए) हुजूर! ये छात्र हैं जो परीक्षा का बहिष्कार करने के लिए छात्रों को भड़का रहे हैं।

मजिस्ट्रेट —30-30 कोड़े और 3-3 साल की सख्त कैद!

(वही कोड़ों की मार और वंदेमातरम् की आवाजें।)

(घण्टी बजती है। तीन किसान नेता, एक मजदूर नेता और एक बिल्ला लगाए नेशनल वालंटियर)

सिपाही —ये तीनों किसान नेता हैं जो गांवों में सभाएं करके किसानों को भड़काते हैं कि तुम लगान मत दो और सत्याग्रह में शामिल हो जाओ। यह मजदूर नेता है जो मजदूरों की हड़तालें करवाता है और यह वालंटियरों का दलपति है जो वालंटियरों को पिकेटिंग करने से लेकर हर प्रकार के हथियार चलाने की ट्रेनिंग देता है।

मजिस्ट्रेट —इनमें से हरेक से जेल वाले अपने तरीकों से निबटें और बाद में इन्हें फांसी दे दी जाय।

मजिस्ट्रेट —एस. पी. साहब! आपने सुना "बंग भंग" की योजना के खिलाफ अकेले एक जिले से 70,000 हस्ताक्षर भारत सचिव को भेजे गए हैं, एक प्रदेश में 2000 सभाएं हुईं। और हर सभा की उपस्थिति 50 हजार से कम नहीं रही और उस कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को सनक सवार हो गई कि वह घर-घर जाकर लोगों के राखी बांधता जा रहा है जिसका अर्थ है "[illegible]" मनाकर बंगाल की संयुक्तता की रक्षा करने

के लिए मजिस्ट्रेट में शामिल होना। सरकार इनके इरादे इनको नहीं जानती।

मजिस्ट्रेट —सर! कलेक्टर की सभी मांगें वालों को पुलिस ने गोली मारकर ढेर कर दिया। वालों के हाथों में बड़े बैनर लिया था—"इनकलाब ही बस है" "वन्देमातरम्" और "दमन नहीं होगा, नहीं होगा। इसने बगावती 'नवीनी' 'बाजार पत्रिका', 'वर्तमान हिन्दी', 'केसरी', 'गुदगर' के सम्पादक होकर, कर्मचारियों की खूब पिटाई और मनाई करते हैं। फिर भी पता नहीं चले गुप्त रूप से कहां से छपते रहते हैं।

(घंटी बजती है! सिपाही आता है उसके साथ एक खूबसूरत बंगाली महिला आती है! सिपाही चला जाता है)

महिला —गुड मॉर्निंग सर!

मजिस्ट्रेट —मॉर्निंग! आप कौन हैं?

महिला —माई नेम मिस स्वीटी! एज 39? मोस्ट अर्जेन्ट सूचना है, बिल्कुल मोस्ट सिक्रेट!

मजिस्ट्रेट —आप महानुभाव बुरा न मानें तो 10 मिनट तक एस.पी. साहब के कमरे में तशरीफ ले जायं!
(सब 'ओ.के.' कहकर बाहर चले जाते हैं)

मजिस्ट्रेट —बैठिए! क्या बात है? आपके प्रमाण-पत्र?

महिला —(बैग से कागज दिखाते हुए) यह देखिए। लेकिन मैं मजिस्ट्रेट से बहुत डरती हूं। वे बड़े हृदयहीन होते हैं।

मजिस्ट्रेट —यह गलत है। आओ स्वीटी, रिटाइरिंग रूम में चलें।
(वह हाथ पकड़कर पीछे की कमरे की ओर ले चलता है।)

मजिस्ट्रेट —यू आर रियली सो स्वीट!

महिला —पहले वो बात जिसके लिए मैं आई हूं। बैठिए।

मजिस्ट्रेट —ठहरो एक मिनट अचानक कोई आ जाय। चिटखनी लगा दूं।
(वह चिटखनी लगाता है इतने में महिला पिस्तौल से धड़ाधड़ गोलियां चला देती है। मजिस्ट्रेट लड़खड़ाकर गिर पड़ता है। वह रिटाईरिंग रूम का दरवाजा बंद करके पीछे के दरवाजे से भाग जाती है। नेपथ्य में 'वंदेमातरम्' के नारे सुनाई देते हैं।)

अंक–३ दृश्य–३

(स्टेज पर हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, किसान, मजदूर, शिक्षक, छात्र, स्त्रियाँ, कवि-लेखक, बच्चे, जवान और बूढ़े गुलाल उड़ा रहे हैं और सभी के चेहरों पर मगा रहे है। ढोल, डफ-मजीरे बज रहे हैं। लोग उल्लास में भंगड़ा और होली के मे नाच नाच रहे हैं। बोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है—'बंग-भग की योजन को रद्द किए जाने के उपलक्ष्य मे जनता का 'विजयोत्सव'। लोक-नृत्य और लोक-गीतो के बीच-2 मे नारे भी लगते हैं—'बग-भग की साजिश—हमने तोड़ी, हमने तोड़ी', 'सयुक्त बगाल—अमर रहे, अमर रहे', 'जनसघर्ष—जीत गया, उपनिवेशवाद—हार गया', 'जंग-ए-आजादी—जिन्दाबाद, जिन्दाबाद! अंग्रेजी राज—मुर्दाबाद, मुर्दाबाद', '1757 का, 1857 का जग हमारा बढ़ चला, जग हमारा बढ़ चला।')

शिक्षक —अच्छा, अब आप लोग बैठने की तकलीफ़ करें। (पगड़ी वाले किसान की ओर इशारा करते हुए) ये गांव के किसान नेता अपनी इस विजय सभा की सदारत करेंगे। आइए किसान भाई!

(किसान नेता बैठ जाता है)

शिक्षक —सबसे पहले मजदूर नेता दो शब्द कहेंगे।

मजदूर नेता —आज हमारी इस जीत का कारण हम सब का जगे आज़ादी मे एक साथ जूझना और बलिदान देना है। अभी हमारा जग बाकी है। जब तक अंग्रेजी राजा को पूरी तरह खत्म करके मुल्क को आजाद नही कर देंगे—तब तक हमारी यह लड़ाई जारी रहेगी। मेरे साथ आप सभी जोर से नारा लगाएंगे "दुनिया भर के मेहनतकशो—एक हो, एक हो। इन्कलाब-जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!!"

शिक्षक —छात्र नेता दो शब्द कहेंगे।

छात्र नेता —बहुत से छात्रों ने परीक्षा-बहिष्कार किया, बायकाट और स्वदेशी आन्दोलन मे आगे बढ़कर हिस्सा लिया इस दौर मे अनेक छात्रो ने अपने प्राण न्योछावर किए। लेकिन आज हमें खुशी इस बात की है कि हमने बंग-भग को रोकने मे सफलता पाय

'हमारी एकता जिन्दाबाद !'

निशान —मैं आपको सूचित कर दूं कि आगे के संघर्ष की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक समिति का गठन किया जा चुका है। अध्यक्ष जी दो शब्द कहेंगे फिर जुलूस मुख्य रास्ते से गुजरता हुआ 'संकल्प-स्थल' पर पहुंचेगा।

किसान नेता —हमने तो इस राज में अकाल ही अकाल देख्या है और जिस पर जालिम अंग्रेजी हुकूमत के तरह-तरह के लगान, कुर्की, बेदखली, तरह-तरह के अत्याचार। भाई लोगों, इस जालिम हुकूमत को देश से धक्का मारकर निकले बिना चैन से नहीं बैठना है। यही मेरी विनती है।

(इसके बाद सब खड़े हो जाते हैं। फिर गुलाल डालने, लोक नृत्य, लोक गीतो और नारों का वातावरण)

शिक्षक —हां, अब जूलुस के रूप में चार-चार की पंक्ति मे खड़े होकर चलेंगे।

(जुलूस नारे लगाते हुए चल पड़ता है)

अंक–४ दृश्य–१

(इंग्लैंड के हाई कोर्ट के जज रौलट, सेटीशन (राजद्रोह) कमेटी के अन्य सदस्य, गुप्तचर विभाग के निदेशक, पुलिस प्रभारी, विधि विशेषज्ञ और सचिव विचार-विमर्श में लगे हुए हैं।)

रौलट —मि. सैक्रेटरी, हमारी इस रिपोर्ट को अब हमने कितने भागों में बांटा है ?

सचिव —आपका आशय कटेंट से है न माइ लार्ड ! इसमें हड़तालों और हंगामो का हवाला दिया गया है, उनमे राष्ट्रवादियों, राष्ट्रीय क्रांतिकारियो, जिनमें देश और विदेश मे काम करने वाले गरम और दोनों दलों के नेता शामिल किए गए हैं — उनके कारनामे, राजद्रोहों का वर्गीकरण और अंत मे राजद्रोहियों को कुचलने के लिए दिए जाने वाले दंडो का उल्लेख

रौलट — जिरह में बताओ कि इन कम्बख्तों ने कहाँ-कहाँ क्या-क्या उद्दण्डताएं की हैं ?

सचिव — सन् 1757 से लेकर 1857 तक 124 किसान विद्रोहों, मजदूरों की अनेक हड़तालों तथा दूसरे तबकों के हंगामों को भूमिका के रूप में लिया गया है, फिर 1857 का गदर और किसान मजदूर बलवे और हड़तालें, फिर लगातार चलने वाले जन विद्रोह और बगावत को लेकर किए जाने वाले फसाद, सत्याग्रह, स्वदेशी आंदोलन, हड़तालें और आतंकवादी हमले, "कामागाटा मारू" अभी प्रथम विश्व युद्ध शुरू होते ही मोहन सिंह भकना के साथ स्वदेश लौटे गदर पार्टी के नेताओं द्वारा किए गए गदर कारनामे, जिसमें भारतीय रेजिमेंट का बलवा, अकाल और इन्फ्लूएन्जा की महामारी में 1 करोड़ 30 लाख लोगों की मौतों को लेकर हंगामे। बम्बई, मद्रास, कानपुर और अहमदाबाद में हुई बड़ी मिल मजदूर हड़तालें, लम्बी रेल मजदूर हड़तालें और इसके अलावा रूस की अक्तूबर क्रांति करने वाले देशी-विदेशी बोल्शेविकों के षडयन्त्रों का सार इस रिपोर्ट में दिया गया है। ऐसा लगता है सर, कि यह देश हड़तालों और हंगामों का ही देश है। इसका नाम तो बलवा देश होना चाहिए था।

रौलट — बड़ा उलझा हुआ दस्ता है मि. सेक्रेटरी! एक नेता पार्टी का नारा देता है और जनता को भड़का देता है, दूसरा नेता पार्टी का नारा देता है और जनता को भड़का देता है, तीसरा जगह-जगह मारकाट करके जनता को भड़का देता है। कोई [illegible] बनकर भड़काता है, कोई महात्मा तो कोई [illegible] [illegible] तो इन सबको देखना पड़ेगा और फिर [illegible] इनमें क्रान्तिकारियों की [illegible] को पकड़ने ही [illegible] अब यदि हम थोड़ी सी भी ढील करेंगे तो वह [illegible] पर भी आ सकता।

गुप्तचर निदेशक — सर, हर प्रकार की [illegible] करने वालों की [illegible] रिपोर्ट, इस रिपोर्ट में हमने [illegible] करते हैं [illegible] आतंकवादी [illegible] [illegible] इस रिपोर्ट में पूरा [illegible] है हुजूर।

पुलिस प्रभारी —सर, हमने राजविद्रोहों का वर्गीकरण करने में भी सहयोग दिया है साथ ही छिपी साजिशों का भी विश्लेषण किया है। अब इस सारी सामग्री के आधार पर हमारे इन विधिविशेषज्ञ महोदय ने जो सुझाव दिए है इस रिपोर्ट मे वे भी हैं। आप (विधि विशेषज्ञ की ओर संकेत करके) इस ओर संकेत करेंगे।

विधि विशेषज्ञ —ये सुझाव तो सर को मालूम ही हैं फिर भी दोहरा दूं कि युद्ध के दौरान ब्रिटिश शासकों के दमनकारी विशेषाधिकार आगे भी कायम रहेंगे, ये सुरक्षा कानून कहलाएंगे। राजद्रोह कार्य के संदेह पर किसी भी व्यक्ति को मुकदमा चलाए बिना जेल में या किसी भी स्थान पर नजरबन्द रखने तथा उसकी गतिविधि पर बंदिश लगाने के लिए उसे बिना सुनवाई का मौका दिए दंडित करने का हमे अधिकार होगा।

रौलट —(रिपोर्ट को हाथ से लेते हुए और सचिव के संकेतानुसार हस्ताक्षर करते हुए)—

आप सबके सहयोग से यह रिपोर्ट अब मुकम्मल दस्तावेज का रूप ले चुकी है। मि. सैक्रेटरी, इसे जल्दी ही एक्ट बनने के लिए भेज दो! हां, पंजाब के बारे में क्या कह रहे थे?

सचिव —सर, पंजाब जिस पर कभी हम पूरी तरह नाज़ किया करते थे—अब बिल्कुल बदल चुका है, बायकाट, स्वदेशी, स्वराज आंदोलनों, किसानों और मजदूरों की लाल झंडा यूनियनों की हड़तालों, गदर पार्टी के भीतर-बाहर के प्रचार कार्यों, उनकी हलचलों और अन्दर से पनपती हुई साजिशो ने आबोहवा को काफी गरम कर दिया है। लाल-बाल-पाल का चक्कर तो चला ही साथ ही साथ पुलिस और फौज के गिल भी अपने विश्वास लायक नहीं रहे।

रौलट —क्या हो गया इस मुल्क को? लगता है चारों तरफ आग धधक रही है। सान फ्रांसिस्को मे एक आश्रम खोला गया जिसका नाम रखा गया 'युगांतर आश्रम' और वहां से एक अखबार निकाला गया जिसका नाम रखा गया 'गदर'। इस 'गदर' के पहले अंक मे लिखा गया—

'हमारा नाम क्या है ?—ग़दर। हमारा काम क्या है? बग़ावत करना....। यह बग़ावत कहां होगी ?—भारत में। वह कब होगी ?—कुछ अरसे में। वह क्यों होगी ?—इसलिए कि लोग अंग्रेज हुकूमत के जुल्मोसितम अब और बर्दाश्त नहीं कर सकते और आजादी के लिए लड़ने मरने को तैयार हैं। इस बग़ावत के लिए तैयारी करना हर हिन्दुस्तानी का फर्ज है।'

—हमें इस तरह ब्रिटिश एम्पायर के हर दुश्मन से सख्ती से निबटना होगा।

(पर्दे के पीछे से आंधी और तूफ़ान की ध्वनि के साथ-साथ पहले दूर से आती हुई 'पगड़ी सम्भाल जट्टा' के समवेत स्वर की आवाज़ और उसके बाद गोलियां चलने की आवाजें। चीखें, तूफ़ान, 'पगड़ी सम्भाल' की आवाज और रौलट के साथ सभी के खड़े होने पर पर्दा गिरता है।)

अंक—४ दृश्य—२

(सत्याग्रह आश्रम के मैदान में एक विशाल प्रार्थना-सभा का आयोजन किया जा रहा है। प्रार्थना सभा में सभी धर्मों के लोग शामिल हैं। हजारों लोग एकदम शांत भाव से कीर्तन कर रहे हैं—'रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीता राम। 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सम्मति दे भगवान !' मंचनुमा चबूतरे पर महात्मा गांधी के आ जाने से सब खड़े होते हैं। गांधी सबको दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। कीर्तन चलता रहता है। गांधी चबूतरे पर पलथी लगाकर बैठ जाते हैं। वे भी कीर्तन में स्वर देते दिखाई देते हैं। कीर्तन की अवधि समाप्त होते ही "वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाणे रे।" का पूरा भजन गाया जाता है। कीर्तन-भजन की समाप्ति के बाद गीता का श्लोक होता है:—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूः मा सगत्वधि अकर्मणि॥

आ 'या इला इल इल्ला, या इला मुमानल्ला। अल्ला हो अकबर।

सब शांत और तल्लीन होकर बैठे हैं। गांधी जी चबूतरे पर खड़े हो जाते हैं। गम्भीर स्वर में बोलना शुरू करते हैं। हजारों लोग सांस रोक कर जैसे गुन

रहे हो ताकि कोई शब्द अनसुना न रह जाय। गांधी जी कहते है—खादी ग्रामोद्योग, हिन्दू-मुस्लिम एकता, छुआ-छूत नष्ट करना, शराब बन्द, प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामसुधार और हिन्दी प्रचार ये कार्यक्रम हर सत्याग्रही को अपनाना है। जिस तरह सशस्त्र विद्रोह के लिए सैनिक शिक्षा जरूरी है, उसी तरह असहयोग आंदोलन के लिए रचनात्मक कार्यक्रम की शिक्षा जरूरी है।"

'हम सत्याग्रही हैं। सत्याग्रही अत्याचारी का प्रतिरोध करना चाहता है, वह अत्याचारी इस सत्याग्रही के शरीर और उसकी भौतिक सम्पत्ति पर भले ही अधिकार कर सकता हो, किन्तु वह सत्याग्रही की आत्मा को किसी प्रकार की शक्ति प्रयोग से नहीं जीत सकेगा। शरीर यदि कारावास में डाल दिया जाय, तो आत्मा अविजित और अविजय रहेगी।'

हमें स्वराज पाने का हक है। हम उसके लिए सत्याग्रह करते हैं। ब्रिटिश हुकूमत इसे राजद्रोह मानती है। उसने सत्याग्रह को दबाने और स्वाधीनता के सिद्धांतों का विघातक है, अतः उसको किसी भी तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता। हर हिन्दुस्तानी का फर्ज है कि वह इस चुनौती का जवाब देने के लिए आगे आए। हमें इसके खिलाफ़ देश भर में सत्याग्रह करना है। रौलट एक्ट और ऐसे ही अन्य हड़ताल विरोधी काले कानूनों का प्रतिरोध करने के लिए 'सत्याग्रह प्रतिज्ञा' पत्र पर हस्ताक्षर आन्दोलन और तेज किया जाना है। और 6 अप्रैल 1919 के दिन सारे देश में आम हड़ताल होगी। हड़ताल के दिन हिंदू और मुसलमान सभी उपवास रखेंगे और सार्वजनिक रूप से प्रार्थना सभाओं में भाग लेंगे।

अभी सत्याग्रह-प्रतिज्ञा को एक साथ खड़े होकर बोलेंगे—(सब एक साथ बोलते है)—"मैं शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूं कि इन विधेयकों को कानून का रूप दिया गया तो जब तक उन्हें वापिस नही लिया जायेगा, तब तक मैं इन तथा ऐसे अन्य कानून को भी, जिसे इसके बाद नियुक्त की जाने वाली, सत्याग्रह कमेटी उचित समझेगी, मानने से नम्रतापूर्वक इन्कार कर दूंगा। मैं इस बात की प्रतिज्ञा करता हूं कि इस युद्ध में ईमानदारी के साथ, सत्य का अनुसरण करूंगा और किसी के जानमाल को हानि न पहुंचाऊंगा।

(गांधी जी बैठ जाते हैं। सबको बिठा दिया जाता है। एक बार फिर "रामधुन" चालू होती है, और अंत में "वन्दे मातरम्" के साथ प्रार्थना सभा समाप्त होती है। गांधी जी सबको प्रणाम करके चबूतरे से उतर कर चले जाते हैं। बाद में सबके चले जाने के साथ औरतें अब भी रामधुन करती निकलती हैं। और पर्दा गिरता है।)

अंक–४ दृश्य–३

(पंजाब का जनरल डायर और डिप्टी कमिश्नर आपस में विचार-विमर्श कर रहे है।)

डायर —इस सनकी फकीर मोहनदास करमचन्द गांधी जिसे ये जाहिल हिन्दुस्तानी 'महात्मा गांधी' कहते हैं—के एक प्रार्थना सभा में '६ अप्रेल को सत्याग्रह' कहने मात्र से सारे देश में एक साथ सब काम बंद हो गया। इतना पाबंद तो कोई फौजी अफसर भी नही कर सकता जैसा इस अधनंगे फकीर ने कर दिया। और तो और जिस पंजाब पर मैं अपना रौब डाले हुए था—वह भी उस दिन मेरे हाथ से निकल गया। क्या हुआ कमिश्नर, सारे मुल्क पर यह कैसा जादू?

कमिश्नर —छोड़िए सर, बीती हुई घटनाओं को। आगे सुना है और बड़ा हंगामा होना है। आपके इशारे पर मैंने धोखे से डॉ. सत्यपाल और डॉ. किचलू को अपने घर बुलाकर गिरफ्तार करवाया और तुरन्त अमृतसर से बाहर निर्वासित कर दिया। यह खबर भी आग की तरह फैल गई, विरोध स्वरूप हजारों लोगों का जुलूस निकला। हमारे गोरे सिपाहियों ने गोलियाँ चलाई तो जुलूस वाले इधर उधर बिखर गए पर 20 फिर भी मर गए। उत्तेजित भीड़ बैंक की ओर बढ़ी और उत्पात मचाया। कुछ अपने लोग भी मरे।

डायर —अब क्या पोजीशन है?

कमिश्नर —अपनी सरकार ने एक ओर अमृतसर को आपके हवाले कर दिया है, जबकि आज घंटे भर बाद ही जलियांवाला बाग में एक विशाल 'विरोध सभा' का आयोजन किया गया है।

डायर —मैं इन जानवरों से निबटना जानता हूं। (एक कागज कमिश्नर को देते हुए) ज्यों ही सरकार ने अमृतसर की बागडोर मेरे हाथ में दे दी—मैंने तुरन्त जो रण नीति तय की उसके अनुसार इसमें हिदायतों का खुलासा नोट कर दिया है। जाओ, इसमें बताए गए समय के हिसाब से काम करवाना है।

कमिश्नर —(कागज लेकर) अच्छा सर, मैं चला!

दूसरा —हां, मैं भी जा रहा हूं। फिर मिलेंगे।

(दोनों चले जाते हैं। दूसरी ओर से एक छोटी सी मेज लिए एक आदमी आता है और मेज और कुर्सी लगा देता है। एक तख्ते पर 'विरोध सभा' लिखा है इसे एक ओर टांग दिया जाता है। क्रमशः लोग आने लगते हैं। कुछ लोग नारे लगाते हैं—डॉ. सत्यपाल और डॉ. किचलू को रिहा करो, रिहा करो। क्रमशः स्टेज भर जाता है। इतने में एक व्यक्ति हंसराज के पास खड़ा होकर सबको बिठाता है।)

हंसराज —सबसे पहले ये दो जवान गाना सुनाएंगे।

दोनों जवान —'पगड़ी सम्भाल जट्टा, पगड़ी सम्भाल वो ए!
लुट गया माल तेरा लुट गया माल वो ए!
पगड़ी सम्भाल जट्टा!
माझे दे शोर नाल, मालवे दे शोर नाल
कदी नइयों हार वो ए!
पगड़ी सम्भाल वो ए!

(ज्यों-ज्यों गाना चलता है। पर्दे के पीछे डायर पुलिस वालों और फौजियों को रास्तों पर तैनात करता और रास्ते रोकता नजर आता है।)

हंसराज —भाइयो, आज हम इसलिए यहां आए ....

(इतने में जनरल डायर की कर्कश आवाज़ सुनाई देती है—फायर!' और इस आवाज़ के साथ कभी एक रास्ते से तो कभी दूसरे रास्ते से गोलियां चलने की आवाज़ आती है। भगदड़ मचती है लेकिन रास्तों को रोके हुए सिपाही खड़े हैं, गोलियां चला रहे हैं। दस मिनटों में 1650 गोलियां चल पड़ती हैं। स्टेज पर लाशें बिछ जाती हैं। खून से धरती लाल हो जाती है। 13 अप्रैल 1919 की वह सन्ध्या 'जलियांवाला के हत्याकांड' की सन्ध्या बन जाती है। बूढ़े, बच्चे, किसान, मजदूर, औरतें सभी की लाशें दिखाई देने लगती हैं। पर्दे के पीछे से मौत के सन्नाटे को चीरता हुआ ऐलान सुनाई दे रहा है।)

ऐलान —लेफ्टिनेन्ट गवर्नर ओ डायर का ऐलान है कि रात के आठ बजे

के बाद जो भी घर से बाहर दिखाई देगा उसे गोली मार दी जायगी।

(ऐलान एक बार और दोहराया जाता है और तीसरी बार आवाज़ ज्यों-ज्यों धीमी होती जाती है। पर्दा गिरता जाता है।)

अंक–४ दृश्य–४

(कामरेड सैक्रेटरी, एटक सचिव, किसान नेता और पत्रकार विचार-विमर्श कर रहे हैं।)

एटक सचिव —कामरेड सैक्रेटरी, यह तो सही है कि जलियांवाला बाग में अमानुषिक नरसहार ने गांधी जी को यह कहने को मजबूर कर दिया कि यह शैतानी सरकार रास्ते पर नहीं आ सकती, इसे खत्म करना जरूरी है, इसके साथ ही उनके द्वारा चलाया गया असहयोग आंदोलन और अली बन्धुओं का खिलाफ़त आन्दोलन मिलकर हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक बना, और आन्दोलन ने सारे देश को झकझोर दिया। खास तौर से किसान ......

किसान नेता —किसानों में ऐसी जागृति पहले कभी नहीं देखी गई। पहली बार वे खुलकर सामंत भू-स्वामियों के मुकाबले में आ खड़े हुए मालाबार में मोपला विद्रोह, आन्ध्र में और उत्तर प्रदेश में जगह-2 किसान विद्रोह फूट पड़े। चौरी-चौरा में सामंती और पुलिस दमन के खिलाफ़ किसानों ने थोड़ा अपना जुझारूपन दिखाया तो गांधी जी चीख उठे—'हिंसा' और फिर संघर्ष वापिस ले लिया। भला इससे ......

एटक नेता —इन ठंडे छींटों से यह भयकर आग कहीं बुझ सकती थी। अब भारत के ट्रेड यूनियन मजदूर ने मजबूती से जंगे आज़ादी में अपने पांव जमा लिए हैं। मद्रास, बम्बई, कलकत्ता और कानपुर गवाह हैं कि मजदूर लगातार अपने संघर्षों को आगे बढ़ाते हुए स्वतन्त्रता संग्राम को कितना ठोस रूप प्रदान करता जा रहा है। रेल्वे, वस्त्र उद्योग अथवा बागानों में हड़ताल

आन्दोलन नए कीर्तिमान बनाते जा रहा है। मजदूर आंदोलनों ने नेता गिरी के बुलबुलपन की बखिया उधेड़ कर रख दी है। अंग्रेजी हुकूमत ने मजदूर नेताओं पर कानपुर षड्यन्त्र केस चलाकर आन्दोलन कुचलना चाहा, लेकिन उन्हें मुंह की खानी पड़ी। इतना ही नहीं इसके बदले में अब मजदूरों ने सर्वहारा वर्ग की रहनुमा पार्टी-कम्युनिस्ट पार्टी का भी निर्माण कर दिया है।

कॉमरेड सैक्रेटरी —हां, ठीक कह रहे हो भाई, अब हम अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के अभिन्न अंग बन गए हैं। महान् अक्टूबर क्रांति हमारी प्रेरक शक्ति है। भारत का मजदूर-आन्दोलन भारत की आज़ादी की लड़ाई का अटूट अंग बन चुका है। साइमन कमीशन के खिलाफ़ यदि रक्तरंजित आंदोलन न किया जाता तो उस अपमान का बदला लिया जाता जो हमारे नेताओं का वायसराय के द्वारा किया गया था? अभी जब कांग्रेस के अधिवेशन में हजारों मजदूरों ने पंडाल पर पदर्शन करके नारा दिया कि हमारा लक्ष्य पूर्ण आज़ादी प्राप्त करना है तो जवाहरलाल नेहरू द्वारा रक्खे गए मुकम्मल आज़ादी के प्रस्ताव को सम्बल मिला और उसे स्वीकार करते हुए मंच से घोषणा की गई कि हमारा ध्येय है भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति।

पत्रकार —हां, कॉमरेड सैक्रेटरी, देश की आज़ादी के जंग के इतिहास में हमेशा "पूर्ण स्वतन्त्रता" का ध्येय घोषित करने में मजदूरों का यह योगदान गौरव के साथ अंकित किया जाता रहेगा।

(अचानक बाहर 'इन्कलाब–जिन्दाबाद' 'मजदूर-किसान पार्टी–जिन्दाबाद' 'हमारा नारा–मुकम्मल आज़ादी!' कहता हुआ जुलूस आगे बढ़ता सुनाई देता है। किन्तु शीघ्र ही गोली चलने की और इन्कलाब जिन्दाबाद! की आवाज़ और फिर एकाएक चुप्पी।)

पत्रकार —लेकिन साथी, हमारे स्वतन्त्रता संग्राम की दिशा क्या हो सकती है?

कॉमरेड सैक्रेटरी —हमारे अब तक के संघर्ष में अनेक विशेषताओं के होते हुए तथा उसके दिन प्रतिदिन विकसित होते हुए भी इसकी कई

कमियां हमें पीछे खींचती रही है। नेता वर्ग, एक तबका आजादी को प्रधानता न देकर अपने वर्गहित के लिए लड़ रहा है सामन्ती तत्व अपनी जायदाद बचाने के लिए बहती गंगा में हाथ धोना चाहता है। तो धनी वर्ग और अधिक धनी होने की छूट हासिल करने के लिए इस लड़ाई को उकसाता है। अच्छा पढ़ा लिखा तबका नौकरियों में और कौंसिलों में अपना अड्डा जमाने के लिए स्वतंत्रता के स्वर में स्वर मिला रहा है तो हिन्दू साम्प्रदायिकता हिन्दू राज कायम करने और मुस्लिम साम्प्रदायिकता अपना हिस्सा बटाने के लिए आगे आ रहा है।

पत्रकार —यह तो साथी, इसका एक रूप है। इसका दूसरा रूप यह भी तो है कि कोई अंग्रेजों से मिन्नतें करके आजादी हासिल करना चाहता है, कोई अंग्रेज जैसे हिंसक पशु के सामने 'अहिंसा' को ही एकमात्र साधन मानता है। दूसरी ओर एक धारा ऐसी भी है जो जन आन्दोलन से परे हटकर केवल आतंकवादी षडयंत्रों को ही आजादी की जंग समझा है। क्या इन सबसे हम किसी नतीजे पर पहुंच सकते हैं ?

कॉमरेड सैक्रेटरी - सबसे पहले तो यह समझना जरूरी है कि आज हमारे सामने सबसे बड़ा दुश्मन अंग्रेजी राज है, उपनिवेशवादी शासन है जिसे मार भगाना है। न हिन्दू दुश्मन है, न मुसलमान। आपसी दुश्मनी पैदा करना अंग्रेजी प्रशासन चाहता है। दूसरे, आजादी की लड़ाई अवाम की लड़ाई है, जन संघर्ष है जिसका तरीका स्वयं जनता अपनी परिस्थितियों के अनुसार तय करती है। वह अहिंसक असहयोग आन्दोलन भी होता है, गुप्त छापामार युद्ध भी, सशस्त्र विद्रोह भी। किसी-किसी स्तर पर क्रांतिकारी आतंकवाद को भी हथियार के रूप में अपनाया जा सकता है।

पत्रकार —ठीक कहते हो साथी ! दुनिया भर के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास इसी सच्चाई को प्रकट करते हैं। हर स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख नायक जन बल होता है। नेता लोग तो अनेक धाराओं में बटकर संघर्ष की एक स्वरता को कई बार आघात पहुंचा देते हैं। यदि मजदूर, किसान और अन्य स्वार्थ रहित

शरीर गवका न सड़े तो नेता तो पता नहीं कहां-कहां भटकता रहेगा। कोई दोमुंहा बनकर एक ओर प्रशासन से साठ-गांठ कर लेगा, दूसरी ओर लोगों को भड़काता रहेगा। जनता के मूड को, उसके रुख को और उसके तेवर को तो पहचाना जा सकता है, लेकिन नेता की असलियत को तो नेता ही जानता है।

कामरेड सेक्रेटरी —यह कहना पूरी तरह तो सही नहीं है अधिकांश में सही हो सकता है। वैसे यदि नेता वर्गच्युत हो, उसका सर्वहाराकरण हो चुका है, उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक हो तो वह जन-संघर्ष की केन्द्रीय प्रेरक-शक्ति बन सकता है। दरअसल ऐसी प्रेरक-शक्ति के बिना भी जन-आंदोलन दिशाहीन होकर बिखर सकता है। जनता तो लड़ी ही है और निरन्तर लड़ती ही रहेगी, किन्तु गलत नेतृत्व रहा तो वह प्रवाह को गलत दिशा की ओर मोड़ सकता है और तब अनेक बार विदेशी सत्ता जाती भी है तो अपनी गुस्ताखियां छोड़ जाती है।

पत्रकार —अगर आजादी के लिए इतने बेशुमार बलिदान देने के बाद भी हमें लूली लंगड़ी आजादी हासिल हो तो इससे क्या हताशा का माहौल नहीं उभर आयगा ?

कॉ. सै. —कुछ समय के लिए। लेकिन लड़ाई एक बार में समाप्त थोड़े ही होगी। उपनिवेशवाद के जाते ही हो सकता है उसका देशी वारिस धनी सेठ गद्दी पर आ जाय या सम्प्रदायवाद को राज सौंप जाय और वह फासिस्ट बनकर अपना राक्षसी रोल अदा करे या सैनिक तानाशाही को आगे रखकर साम्राज्यवाद नव-उपनिवेशवाद के रूप में अपना खेल खेले। चाहे जो स्थिति हो जनता का संघर्ष हर बुराई के खिलाफ जूझता रहेगा-अहिंसा से और हिंसा से भी। वह जूझता रहेगा जब तक

सत्ता का खुद का भी अन्त करना होगा और तब वह स्वयं भी निर्वाण को मुक्ति को, प्राप्त हो जायेगा।

पत्रकार —क्या भारत में भी ऐसा होगा?

कॉ. सैक्रेटरी —इसमें अपवाद की गुंजायश ही कहां है। राज्यसत्ताओं की समाप्ति की वैज्ञानिक परिकल्पना क्या अंतर्राष्ट्रवादिता की समाप्ति और नव अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के उदय की ओर संकेत नहीं करती?

पत्रकार —तुम कॉमरेड बहुत आगे चल पड़े, बात एक तत्काल पगडंडी ढूंढने की है?

कॉ. सैक्रेटरी —यह बात गलत है साथी, किसी भी तात्कालिकता को सम्पूर्णता से काट कर नहीं देखा जाना चाहिए। फिर भी इतना तो तय है कि भारत के आम लोगों ने अंग्रेजों को धक्का देकर निकालने का जो पक्का इरादा कर लिया है, वह जरूर कामयाब होगा। अंग्रेजी हुकूमत तो यहां रह ही नहीं सकती। भारत की जनता पर चाहे कितना ही दमन हो—वह 'अहिंसा' और 'हिंसा' दोनों ही हथियारों का इस्तेमाल करेगी—कोई उसे उसके रास्ते से नहीं रोक पाएगा और वह अंग्रेजी सत्ता को मार भगाने में कामयाब होगी। उसके आगे की मंजिलें आगे की पीढ़ियां तय करेंगी। अभी तो लाल किले पर लाल निशान.......!

(अचानक पुलिस इंस्पेक्टर और पुलिस दल प्रवेश करता है।)

पुलिस इन्सपेक्टर —इन षड्यन्त्रकारियों को गिरफ्तार करो और उनकी तलाशी लो।

(सब गिरफ्तार करके ले जाये जाते हैं। पर्दा गिरता है।)

(जेल प्रहरी सायं चार बजे के घण्टे बजाता है। जेल की कोठरी में तख्त पर लेटा हुआ भगतसिंह 'इन्कलाब जिन्दाबाद।' 'हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है' कहकर उठ खड़ा होता है। हाथ मुंह धोकर फिर तख्ते पर बैठ जाता है। चन्द क्षणों के बाद कोठरी में टहलने लगता है। और टहलने के साथ बहुत मार्मिक स्वर में गाने लगता है :—

मां ए, रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे बसंती चोला,
जिस चोले को पहन के निकला, उन मस्तों का टोला,
उस चोले की खातिर आखिर अपना मन भी डोला।
मां ए, रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे बसंती चोला!

गाने के बाद गुनगुनाने की मुद्रा मे तल्लीनता की अभिव्यक्ति! उसके पश्चात् चद्दर को हटाकर एक किताब निकालता है और शीर्षक पढ़ता है—'राज्य और क्रांति' लेखक वी.आई. लेनिन' और कहता है–कितनी प्यारी पुस्तक है। इसके चन्द सफों ने ही एक प्रकाश किरण दे दी— ज्ञान की—ज्ञानमय आस्था की किरण! किताब खोलकर पढ़ते हुए)—

"राज्य ताकत का विशेष संगठन है, किसी वर्ग को दबाने के लिए बल प्रयोग का संगठन है। सर्वहारा वर्ग के लिए किस वर्ग को दबाना जरूरी है? बेशक, केवल शोषक वर्ग, यानी पूंजीपति वर्ग को। मेहनतकशों को राज्य की जरूरत केवल शोषकों के प्रतिरोध के दमन के लिए होती है और अन्त तक क्रांतिकारी रहने वाले एक मात्र वर्ग के रूप में पूंजीपति वर्ग के खिलाफ संघर्ष के लिए उसके सम्पूर्ण विस्थापन के लिए सभी मेहनतकशों और शोषितों को एकताबद्ध कर सकने वाले एकमात्र वर्ग के रूप मे उस दमन का नेतृत्व करने मे उसको तामील करने में केवल सर्वहारा वर्ग ही समर्थ है।'

और हमने क्या किया है? हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन और उसके सैनिक संगठन 'रिपब्लिकन आर्मी' का गठन किया जिसका लक्ष्य स्वाधीनता प्राप्त करना और समाजवादी राज्य की स्थापना करना ही तो है।

(टहलते हुए) जब साइमन कमीशन के खिलाफ निकाले गए जुलूस में स्काट ने लाठी से लाला लाजपतराय पर मरणांतक प्रहार कर दिया और लालाजी हमेशा के लिए हमसे विदा हो गए तो मुझे, शिवराम और जयगोपाल को इसका

बदला लेने के लिए ही तो तैनात किया गया था। स्काट के धोखे में पुलिस अफसर सैंडर्स और हैडकांस्टेबल को हमने गोली से उड़ा दिया। किन्तु हमने इश्तिहार में यही तो लिखा था –"हमें एक आदमी को मारने का अफसोस होना चाहिए था, परन्तु वह उस अमानवीय और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का हिस्सा था जिसे नष्ट होना ही है। मानव रक्त का बहना हमें चिन्तित करता है, लेकिन क्रांति की वेदी पर रक्तपात अनिवार्य है। ......हमारा उद्देश्य क्रांति के लिए काम करना है जो मानव द्वारा मानव के शोषण का खात्मा करेगी।'

(प्रहरी 8 बजने के घण्टे लगाता है। एक प्रहरी आकर चाय का कप रख जाता है। भगतसिंह प्रहरी से मुस्कराकर कहता है—नमस्ते भाई! इन्कलाब जिन्दाबाद भाई! और चाय पीने लगता है। चाय पीने के साथ-साथ किताब के पन्ने पर भी नजर टिकाता है। चाय पीने के बाद फिर अपने आप में खो जाता है।)

जालिम अंग्रेज हुकूमत मजदूरों की हड़तालों से बौखला कर मजदूरों और उनके नेताओं पर दमन करने के लिए 'ट्रेड्स डिस्प्यूट बिल' और 'पब्लिक सेफ्टी बिल' केन्द्रीय असेम्बली में ले आई ताकि उन्हें कानून का रूप दिया जा सके। मैंने और बटुकेश्वर दत्त ने विरोध प्रकट करने के लिए असेम्बली में बम फेंका— किसी को मारने के लिए नहीं, देश की रोषपूर्ण भावना को अभिव्यक्त करने के लिए। हमने साथ-साथ नारे भी लगाए थे—'इन्कलाब जिन्दाबाद!' 'ब्रिटिश साम्राज्य का नाश हो।' 'दुनिया भर के मजदूरो! एक हो।'

हमारे द्वारा फेंके गए उस पर्चे में अन्तिम अंश भी तो इस प्रकार था–'हमें यह स्वीकार करते हुए दुःख होता है कि हमें, जो मानव जीवन को अत्यधिक पवित्र मानते हैं, जो ऐसे सुन्दर भविष्य का सपना देखते हैं कि जब मानव पूर्ण शांति और स्वतन्त्रता का आनन्द लेगा, मानव रक्त बहाने को मजबूर होना पड़ा। लेकिन महान क्रांति, जो सबके लिए स्वतन्त्रता लायेगी, मानव द्वारा मानव के शोषण को असम्भव बनाएगी की बलिवेदी पर व्यक्तियों का बलिदान अनिवार्य है।'

क्रांति अमर रहे!

बम और पर्चे फेंककर हम भागे नहीं। हमने अपने आपको गिरफ्तार करा दिया। उन्होंने लाहौर षड़यन्त्र केस का बहाना बनाकर जिन 16 लोगों को गिरफ्तार किया था उनमें मैं, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, राजगुरु, यतीनदास, अजय घोष, शिव वर्मा, यशपाल, विजय सिन्हा, मन्मथनाथ गुप्त, जयदेव कपूर, गयाप्रसाद, कुन्दनलाल, शिवराम, जयगोपाल और हमराज बोहरा शामिल थे।

ओह ! यतीनदास तो 63 दिन तक भूख हड़ताली रहकर शहीद हो गए देश के स्वतन्त्रता संग्राम का बेमिसाल सेनानी !

(इतना कहकर वह एक और किताब को उठाता है।)

लेनिन ! तुम्हारा यह जीवन वृत्तांत मेरे साथ है। मैं जब इसे पढ़ा करता हूं तो मुझे अकेलापन महसूस नही होता। ऐसे लगता है कि हमारी मुलाकात हो रही है। और, लेनिन के अलावा इस काल कोठरी में मेरा है ही कौन तुम हो तो सारी दुनिया मेरे साथ है।

(किताब पढ़ने लगता है। पढ़ते-पढ़ते रुककर कुछ सोचने लगता है सोचते-सोचते 'इन्कलाब जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद इन्कलाब !' कह उठता है।)

हाँ, दिल्ली के सेशन जज के सामने दिए गये अपने बयान में ठीक ही तो कहा था मैंने—

मुझसे, भगतसिंह से, निचली अदालत में यह पूछा गया कि 'क्रांति' से हमारा क्या तात्पर्य है। इस प्रश्न के जवाब में, मैं कहना चाहूंगा कि क्रांति न तो रक्तपिपासु झगड़े हैं और न ही वैयक्तिक हिंसा के लिए यहां कोई जगह है। यह बम और पिस्तौल की उपासना नही है। क्रांति से हमारा अभिप्राय यह है कि प्रत्यक्ष अन्याय कर आधारित वर्तमान व्यवस्था बदलनी चाहिए।

(फिर कुछ रुककर) ये भयानक ... असमानताएं और जबरन थोपी गई विकृतियां विप्लव की तरफ ले जा रही हैं। ये हालात ज्यादा दिन नहीं चल सकते और यह स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान समाज व्यवस्था ज्वालामुखी के किनारे खड़ी जश्न मना रही है-और शोषकों के मासूम बच्चे, जो स्वयं शोषितों से कम नहीं हैं, एक खतरनाक चट्टान के कगार की तरफ बढ़ रहे हैं।

(कोठरी से कुछ दूरी पर दालान में बात करते हुए दो व्यक्ति एक जेलर और दूसरा प्रहरी)

जेलर —आज भी इसके चेहरे पर वही रौनक, वही मस्ती है—मानो कुछ हो ही नहीं रहा है।

प्रहरी —हमें मालूम है जनाब साहब कि इसका यह आखिरी रोज है और मौत इसके नीचे आकर खड़ी हो चुकी है फिर भी इसकी आंखों में मस्ती और चेहरे पर कांति इस तरह दिखाई दे रही है मानो इसने कोई बहुत बड़ी फतह हासिल करली हो। पता नहीं यह दिन रात क्या सोचता रहता है, क्या पढ़ता रहता है, कभी थकता ही नहीं। न कोई इच्छा, न कोई तमन्ना। बड़ा अजीब आदमी है यह!

जेलर —लो, यह खाना खा चुका। अब थोड़ा सा टहलेगा और फिर पढ़ने बैठ जायगा। हां, आज इसका खासतौर पर ध्यान रखना है।

प्रहरी —ऐसा क्यों?

जेलर —ऊपर से आदेश है।

(भगतसिंह टहलता हुआ दिखाई देता है और कुछ देर के बाद फिर अपने तख्त पर बैठकर किताब पढ़ने में लग जाता है। कभी कभी कुछ लिखता भी जाता है। फिर कुछ टहलता है और कुछ पढ़ता है और फिर कुछ लिखता है। कई बार सोचने की मुद्रा में बैठ जाता है। इस तरह सोचने और पढ़ने की स्थिति के बाद तख्ते पर लेट जाता है। लेटे-लेटे फिर पुस्तक पढ़ने लगता है और पढ़ते-पढ़ते पुस्तक हाथ में पड़ी रहती है और सोचने लगता है)

(वह एक फिर बैठ जाता है और धीरे से "इन्कलाब जिन्दाबाद! जिन्दाबाद इन्कलाब!!" कहने के साथ ही गाने लगता है:—

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है॥

(इतने में 12 बजने के घण्टे बजते हैं और इनके सा
दो प्रहरियों की जोर-जोर की आवाज सुनाई देती है- 'पहरेदार! चौकीदार!' 'जागते हो! चौकीदार! 'जागते हो पहरेदार!'

(भगतसिंह किताब पढ़ने में लीन है। बीच में एक कागज निकालकर कुछ लिखता है फिर उसे पढ़ता है।)

भगतसिंह —(कागज पढ़ते हुए)—"मेरे प्यारे साथी सुखदेव! मुझे मालूम है कि मेरा यह छोटा पत्र तुम्हें नहीं मिल पाएगा फिर भी, चाहता हूं कि तुम तक मेरी भावना पहुंच जाय। प्रिय दोस्त! तुम और मैं तो जिन्दा नहीं रह सकते लेकिन हमारी जनता जिन्दा रहेगी। मार्क्सवाद के ध्येय और साम्यवाद की विजय सुनिश्चित है।"

(भगतसिंह प्रहरी को इशारा करके बुलाता है अ
लिखा पुर्जा देकर कहता है—"यह किसी विश्वासी को दे दे
है।" प्रहरी कुशलता के साथ पुर्जा ले लेता है और फि
आवाजें लगाने लगता है-'जागते हो।' भगतसिंह फिर किता
में लीन हो जाता है। फिर सोचने लगता, कभी टहलता
और फिर बैठकर पढ़ने लगता है।)

प्रहरी —उठो, भगत! समय हो गया!

भगतसिंह —(चौक कर देखते हुए) सिर्फ दो मिनट और रुक जाओ। एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से विदा ले रहा है—मैं अपने अजीज़ प्यारे लेनिन से विदा ले रहा हूं—लेनिन के जीवन चरित्र का यह आखिरी सफा पढ़ लेने दो!

जेलर —हां, पढ़ लो, तीन मिनट और!

(भगतसिंह फिर पढ़ने लगता है। पर्दे के पीछे से फांसी का फंदा दिखाई दे रहा है। क्षण भर में जल्लाद घूमता नजर

माता है। मंच पर मजिस्ट्रेट और डॉक्टर प्रवेश करते हैं। भगतसिंह निरपेक्ष भाव से पढ़ता जाता है। प्रहरी आवाज़ देता है–'जागते हो !')

भगतसिंह —(किताब समाप्त करके बंद करते हुए) अच्छा लेनिन, महान् अक्टूबर क्रांति–जिन्दाबाद ! इन्कलाब–जिन्दाबाद ! नया इंसान–जिन्दाबाद !

हां, अब मैं तैयार हूं। डॉक्टर, मैं स्वस्थ हूं। मिस्टर मजिस्ट्रेट, मुझे कुछ नहीं कहना। जेलर, मैं स्वयं अपने गले में फांसी का फंदा डालने चल रहा हूं। चलो ! (भगतसिंह फांसी के फंदे की ओर जाता है। तख्ते पर चढ़ता है। "इन्कलाब जिन्दाबाद !" बोलता है और मुस्कराते हुए अभिवादन का हाथ ऊंचा करता है। "इन्कलाब जिन्दाबाद !" कहते हुए फांसी का फंदा अपने गले में डाल लेता है। जल्लाद रस्सी खींचता है और अंतिम बार 'इन्कलाब जिन्दाबाद !' इन्कलाब........कहते कहते आवाज रुक जाती है। पर्दा गिरता है।)

अंक–५ दृश्य–२

(मजिस्ट्रेट बैठा है। एक तरफ पेशकार फाइलें लिए बैठा है। सचिव है जो कानून की किताबें लिए बैठा है। स्टेनो है जो कार्यवाही को नोट करने के लिए तैनात है। गुप्तचर विभाग का प्रतिनिधि है जो अपनी छानबीन की सूचना देने के लिए है। सुरक्षा गार्ड है जो एक तरफ पीछे तैनात है। न्यायालय के दरवाजे के बाहर पुलिस का सिपाही है और एक चपरासी है जो घण्टी बजने पर नामील करता है। सरकारी और विपक्ष के वकील दोनों तरफ खड़े हैं।)

मजिस्ट्रेट —क्या मुसीबत है कि यह मुल्क षड्यन्त्रों का अड्डा बन चुका है। कानपुर का बोल्शेविक षड्यन्त्र केस, लाहौर षड्यन्त्र केस, पेशावर में चन्द्रसिंह गढ़वाली के नेतृत्व में गढ़वाली सैनिकों का विद्रोह, खान अब्दुल गफ्फारखां के लाल कुरती दल की हरकतें, मजदूर-किसानों की हड़तालें और बलवे, गांधी का सिविल नाफरमानी जिसे वे सत्याग्रह या असहयोग आन्दोलन

कहते हैं और यह मेरठ षड्यन्त्र केस ! सबके पीछे ये
शैतान ही साथ शैतान दिखाई दे रहे हैं। ब्रिटिश साम्रा
के सबसे बड़े दुश्मन यही हैं। पता नहीं कहां भूमिगत रह
ये षड्यन्त्र करते फिरते हैं। इनको जितना खत्म करने
कोशिश करते हैं—ये उतने ही ज्यादा बढ़ते जाते हैं।

(घन्टी बजाता है। चपरासी आता है)

सबसे पहले कानपुर षड्यन्त्र केस के सजा पाने वाले ए.आई. टी.यू.सी. के उपाध्यक्ष और बंगाल मजदूर-किसान पार्टी के सचिव मुजफ्फरअहमद को हाजिर करो।

(मुजफ्फरअहमद कटघरे में खड़े होते हैं।)

मजिस्ट्रेट —तुमने हुकूमत के खिलाफ षड्यन्त्र किया है तुम्हें कुछ कहना है?

मुजफ्फरअहमद —मैं क्रांतिकारी कम्युनिस्ट हूं। हमारी पार्टी कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की नीति, सिद्धांत और कार्यक्रम में पूरा विश्वास करती है। और उनका प्रचार अवस्थानुकूल जितनी अच्छी तरह किया जा सकता है, करती है....इस समय भारत की राज्यसत्ता पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद का कब्जा है। चूंकि मजदूर-किसान साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकेंगे, स्वभावतः वे राज्यसत्ता पर कब्जा कर लेंगे लेकिन वे सत्ता पर कब्जा इस लिए नहीं करेंगे कि राज्य का रूप वैसा ही बनाए रखा जाए जैसा इस वक्त है। वे राज्य के वर्तमान ढांचे को चूर-चूर कर देंगे और उसके स्थान पर वास्तविक जनसत्ता के यन्त्र सोवियत (पंचायत) पर आधारित मजदूरों-किसानों का गणतन्त्र स्थापित करेंगे। अतः हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी का सबसे पहला कर्त्तव्य है जंगी ट्रेड यूनियनें बनाना जिनके अन्दर क्रांतिकारी काडर बढ़ सके। यही वजय है कि हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य मजदूर किसान पार्टी के अन्दर ट्रेड यूनियनें बनाने में प्रायः सारा समय लगाते हैं। उससे ट्रेड यूनियन आन्दोलन संग्रामी रूप धारण कर रहा है।

मजिट्रेट —इसको ले जाओ और अब कानपुर षड्यन्त्र केस में सजा पाये ए आई.टी.यू.सी. के सहायक सचिव और गिरनी कामगार यूनियन बम्बई के महा सचिव श्रीपाद अमृत डांगे को हाजिर करो।

(डांगे कटघरे में आते हैं)

श्रीपाद अमृत डांगे—भारत के कम्युनिस्टों का तात्कालिक लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना है।

मजिस्ट्रेट —इसे ले जाओ और ए.आई.टी.यू.सी. के सहायक सचिव और बम्बई म्युनिसिपल वर्कर्स यूनियन के उपाध्यक्ष एस.वी. घाटे को हाजिर करो।

(घाटे आते हैं)—घाटे, तुम्हें क्या कहना है?

एस.वी. घाटे —एक ईमानदार, सच्ची, मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी की जरूरत है और हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी वही है। वह श्रमजीवी जनगण के स्वार्थों का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सकती है। कम्युनिस्ट वर्तमान राज्यतन्त्र को ध्वस्त कर देना और उसकी जगह साम्यवाद में संक्रमण के दौरान नया यंत्र बनाना चाहते हैं।

मजिस्ट्रेट —इसे भी ले जाओ, और जो आई.पी. रेल्वे मैन्स यूनियन के संगठन सचिव के.एन. जोगलेकर को भेज दो। (जोगलेकर आते हैं) जोगलेकर, तुम्हें कुछ कहना है?

के.एन. जोगलेकर—*हड़तालें मजदूरों के लिए मिलिटरी ट्रेनिंग कॉलेज हैं, वे ऐसे स्कूल हैं जिनमें सर्वहारा को महान संघर्ष में, जो अवश्यंभावी है, शामिल होने के लिए तैयार किया जाता है।* इसमें कोई शक नहीं कि कम्युनिस्ट पूंजीवाद के समझौताहीन शत्रु हैं और मैं इसे छिपाता नहीं कि अगर और जब वस्तुनिष्ठ शक्तियां इतनी परिपक्व हो जायगी, मैं ऐसा आघात करने में न हिचकिचाऊंगा जो पूंजीवाद की शक्तियों को पूरी तरह धराशायी कर देगा।—कम्युनिस्ट की हैसियत से मैं मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांत में विश्वास करता हूं और चूंकि समाजवादी क्रांति का रास्ता राष्ट्रीय क्रांति से होकर जाता है अतः कम्युनिस्ट की हैसियत से मैं निःसन्देह राष्ट्रीय क्रांति के लिए काम करता हूं और हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी भी राष्ट्रीय क्रांति के लिए काम करती है।

मजिस्ट्रेट — जोगलेकर को ले जाओ और गिरनी कामगार यूनियन के सहायक सचिव एस.एस. मीराजकर को भेजो। (मीराजकर आते हैं) मीराजकर! तुम्हें कुछ कहना है?

की है।

मजिस्ट्रेट —घोषालकर को ले जाओ और आल इण्डिया वर्कर्स एण्ड पीजेन्ट्स कान्फ्रेंस के अध्यक्ष सोहनसिंह जोश को भेजो। (सोहनसिंह जोश आते हैं।) क्यों जोश, तुम्हें कुछ कहना है?

सोहनसिंह जोश —हम अकेले साम्राज्यवाद को ही नहीं, साम्राज्य को भी खत्म करना चाहते हैं। भारत को सच्ची स्वतन्त्रता तभी मिलेगी जब ब्रिटिश स्वार्थों को बोरिया बिस्तर समेत निकाल बाहर किया जायगा। ...... भारत सच्ची स्वतन्त्रता सिर्फ क्रांति के जरिए ही प्राप्त कर सकता है, संविधान बनाकर नहीं। हमारी पार्टी पूर्ण स्वाधीनता के लिए समझौताहीन आन्दोलन कर रही है।

मजिस्ट्रेट —जोश को ले जाओ! पंजाब की किरती (मजदूर) किसान पार्टी के सचिव और पंजाब यूथ लीग के संस्थापक अब्दुल मजीद को हाजिर करो। (मजीद आते हैं।) मजीद! तुम्हें कुछ कहना है?

अब्दुल मजीद —मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन सर्वहारा क्रांति भारत में अवश्य सफल होगी।... हम कम्युनिस्ट यही क्रांति करने की कोशिश कर रहे हैं।

मजिस्ट्रेट —मजीद को ले जाओ और बम्बई के समाजवादी पत्र 'स्पार्क' के लेखक जी. अधिकारी को हाजिर करो। (अधिकारी आते हैं) अधिकारी, तुम्हें कुछ कहना है?

जी. अधिकारी —अभियोग पक्ष ने कम्युनिज्म, कम्युनिस्टों और कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल को बुरी से बुरी गाली दी है। उन्होंने कहा है कि हमारा अपराध राज्य के ही नहीं बल्कि सारे समाज के खिलाफ है। मैं उनकी गालियों की निन्दा करूंगा जिसके वे योग्य है और सारे मानव समाज के विरुद्ध अपराधी होने का

आरोप साम्राज्यवादियों और उनके बड़े वेतनभोगी दलालों पर लगाऊंगा। मैं सवाल करता हूं कि सामाजिक अपराधी कौन है, खून के प्यासे साम्राज्यवादी जिन्होंने सारे महादेशों में विध्वंस लीला की, जिन्होंने खून और आतंक का राज कायम किया, जिन्होंने इन महादेशों के करोड़ों श्रमजीवियों को बेहद गरीबी और असहनीय दासता में ला पटका है और जो वहां के जनगण को सामूहिक तौर पर नेस्तनाबूद करने की धमकी दे रहे हैं या कि कम्युनिस्ट अपराधी हैं जो सारी दुनिया के श्रमजीवी जनगण की क्रांतिकारी शक्तियों को गोल-बन्द करने और उसे निर्दय दमन और पाशविक शोषण पर आधारित इस अभागी व्यवस्था के विरुद्ध झोक देने पर, उसे ध्वस्त कर देने पर और उसकी जगह नई व्यवस्था की रचना करने पर तथा इस तरह मानव समाज और उसकी सभ्यता को महाविनाश से, जिसकी तरफ वह निःसंदेह तेजी के साथ जा रहा है, बचाने पर तुले हैं ? इस मुकदमे के सामाजिक अपराधियों के सरकारी प्रतिनिधि अभियोग पक्ष की कुर्सियों पर बैठे हैं।

(इतना कहने के बाद अधिकारी को भेज दिया जाता है।)

मजिस्ट्रेट —मेरठ षड़यन्त्रकारियों की अपनी स्वीकृति के बाद अब और किसी सबूत की कोई आवश्यकता नहीं। इसलिए मुजफ्फर अहमद को आजीवन काले-पानी, डांगे, स्प्रैट, घाटे, जोगलेकर, निंबकर को बारह-बारह साल का काला पानी, ब्राडले, मीराजकर और उस्मानी को दस-दस साल के काले पानी, मजीद, जोश और गोस्वामी को सात-सात साल के काले पानी, अयोध्याप्रसाद, अधिकारी, जोशी और देसाई को पांच-पांच साल के काले पानी, चक्रवर्ती, बसाक, हचिन्सन, मित्र, झाब-वाला और सहगल को चार-चार साल के कठोर कारावास तथा हुदा, अल्वे, कसले, गोरीशंकर और कदम को तीन-तीन साल के कठोर कारावास की सजा दी जाती है। ये चाहें तो चाहें अपील कर सकते है।

अंक–५ दृश्य–३

(ब्रिटिश भारत सरकार के सचिव सर रिचार्ड टोटेनहम, ब्रिटिश सरकार के होम मेंबर सर रेजनीनाल्ड मैक्स्वेल और इंटेलिजेंस ब्यूरो अहमद विचार विमर्श करते दिखाई दे रहे हैं।)

टोटेनहम —आप लोगों को मालूम होगा महानुभावों ! कि हमें चल रहे हंगामों, बग़ावतों और तथाकथित 'स्वाधीनता की समीक्षा-रिपोर्ट तैयार करनी है और उसके आध प्रांतीय सरकारों को आदेश भेजने हैं कि कांग्रेस, मुस्लि कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य उसी क़िस्म के लोगों के क्या नीति अपनाएं। उधर दूसरे विश्वयुद्ध ने उलझ कर रखी हैं और इधर इस मुल्क में बढ़ते हुए नित नए ने। मिस्टर अहमद, तुम्हारे ब्यूरो की ओर से क्या है ?

जी. अहमद —हमने यदि एक भगतसिंह को फांसी दी तो उसको तो अवश्य खत्म कर दिया, लेकिन कितने ही और भगतसिंह हो गए, इसी तरह न जाने और कितने ही चन्द्रशेखर आ सुखदेव और राजगुरु पैदा हो गए। कभी कोई कांग्रेस लिस्ट पार्टी बन जाती है तो इधर कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा मजदूरों की हड़तालें करवाने तक ही सीमित नहीं उसने अखिल भारतीय किसान सभा, अखिल भा स्टूडेंट्स फैडरेशन और अखिल भारतीय प्रगतिशील संघ का निर्माण कर स्वतंत्रता संग्राम को अधिक और अधिक गहरा बनाने का कार्यक्रम शुरू कर दिया हमारे मित्र राजाओं की रियासतों की जनता को भड़का जा रहा है। ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक कम्युनिस्ट सोशलिस्ट तो वामपंथी हैं ही, कांग्रेस में भी वामपंथी भर हैं–जैसे जवाहरलाल नेहरू।

टोटेनहम —यही तो सबसे बड़ा खतरा है अहमद ! इस देश के वामपंथ इसमें कई बार गांधी जी को हार माननी पड़ी है। [illegible] उदाहरण है पट्टाभिसीतारमैया की हार और सुभाषचन्द्र बो की जीत। वैसे प्रांतीय एसेंबलियों में इनने हिन्दू मुसलमानों

को साम्प्रदायिक आधार पर मिटाने की कितनी ही कोशिश की लेकिन कांग्रेस के वामपंथ ने भारी विजय हासिल कर हमारे इरादों को ध्वस्त कर दिया।

जी. महमद —सर ! इसके साथ यह भी तो कम आश्चर्य की बात नहीं कि ब्रिटिश कम्युनिस्ट भी वही सोचते हैं जो भारत के कम्युनिस्ट अर्थात् वे भी ब्रिटिश साम्राज्य को भारत के नक्शे से साफ करने में मदद दे रहे हैं-स्प्रेट और ब्रैडले इसी तरह की मिसालें हैं। लेकिन....

टॉटेनहम —हां लेकिन क्या ?

जी. महमद —यह कि 'भारत छोड़ो आन्दोलन' को लेकर दक्षिण पंथियों ने कम्युनिस्टों के खिलाफ भीतर ही भीतर सरफुर-सरफुर चालू कर दी है। क्यों मैक्स्वेल साहब ऐसा ही कुछ चल रहा है न ?

मैक्स्वेल —हां, ये हिन्दूवादी कांग्रेसी और कट्टरपंथी मुस्लिम लीगी कम्युनिस्टों और कांग्रेसी जैसे वामपंथियों को "ब्रिटिश सरकार के दलाल और जासूस" तक कह बैठते हैं।

टॉटेनहम —लेकिन हमने इसकी जांच भी तो करवाई थी। आप लोग तो पार्टी के जनरल सैक्रेटरी पी.सी. जोशी से भी मिले थे और उनके पत्र भी तो इन्टैलिजेंस ब्यूरो के पास फाइल में सुरक्षित रखे हैं। उन सबसे आपको क्या लगा मि. मैक्स्वेल ?

मैक्स्वेल —सर, हकीकत कुछ और है। क्रिप्स मिशन की असफलता से हताशा का वातावरण पैदा हुआ। उस वातावरण को चीरते हुए गांधी जी ने कांग्रेस की वर्किंग कमेटी से जोर देकर कहा कि वह समय आ गया है कि अब कांग्रेस को मांग बुलन्द करनी चाहिए—'अंग्रेजो ! भारत छोड़ो।' इस पर एक निर्णय किया गया कि वायसराय के सामने एक प्रस्ताव भेजा जाय कि भारत में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करो नहीं तो देशव्यापी आंदोलन होगा और जिम्मेवारी ब्रिटिश सरकार की होगी।

टॉटेनहम —क्या कम्युनिस्ट इसके खिलाफ थे ?

मैक्स्वेल — नहीं। उनका कहना था कि राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होनी चाहिए और उसके नेतृत्व में जर्मन फासिस्टों और उनके पिछल्ले जापान के खिलाफ जनयुद्ध में हमें सक्रिय हिस्सा लेना

चाहिए। गांधी जी जापान के आक्रमण की सम्भावना से ही इन्कार करते थे और आन्दोलन को अहिंसक रखने पर ज़ोर देते थे जिसे न तो मौलाना अबुलकलाम आज़ाद और जवाहरलाल नेहरू और न ही कम्युनिस्ट पार्टी के पी.सी. जोशी ही अव्यावहारिक समझते थे। उनका खयाल था कि ब्रिटिश सरकार आन्दोलन शुरू होने से पहले ही नेताओं को पकड़ लेगी और फिर नेतृत्वहीन जनता से अहिंसक बने रहने की 'गारन्टी' नहीं की जा सकती।

टोटेनहम —"भारत छोड़ो" आन्दोलन आखिर शुरू कब हुआ?

मैक्सवेल —"भारत छोड़ो" आन्दोलन की न तो तैयारी की गई थी न ही इसे शुरू किया गया था। यह एक आह्वान मात्र जो सारे देश में फैल गया और वह शुरू होने से पहले दूसरा रूप धारण कर गया। ब्रिटिश शासकों ने सारे नेता को रातों रात पकड़ लिया। सुबह नेताओं की गिरफ्तारी खबर सारे देश में फैल गई और जिस किसी ने सुना आग बबूला हो गया। जनता ने अपने गुस्से का इज़हार बेतहाशा तोड़फोड़ करके किया। मिस्टर अहमद ब्यूरो का रेकार्ड क्या कहता है?

जी. अहमद —ब्यूरो के हिसाब से 250 रेल्वे स्टेशन और 800 पोस्ट ऑफिस जलाकर खाक कर दिए गए, 3500 टेलीग्राम और टेलीफोन के तार काट डाले गए, 70 पुलिस थाने जला डाले गए और 85 सरकारी इमारतों को नष्टभ्रष्ट कर दिया गया। सरकार ने 60,229 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया, 18,000 को नजरबन्द किया, 940 को गोलियों से उड़ा दिया और 1630 को बेरहमी से मार-मार कर अपंग बना दिया। विश्व विद्यालयों और कारखानों में ताले लगा दिए गये। यह था वह जनता का स्वतः स्फूर्त जन आंदोलन जो "भारत छोड़ो" आंदोलन बना, वास्तव में यह था 'गिरफ्तारी विरोधी' जन-विद्रोह ! जो हिंसक था जिससे कांग्रेस ने इंकार किया, जिससे गांधी जी ने इन्कार किया था—लेकिन जिसको दक्षिण पंथियों ने धींगामस्ती से अपना कहकर उसका श्रेय लेना चाहा। दरअसल, सारा आन्दोलन उत्तेजित जनता द्वारा वामपंथी और

आतंकवादियों के हाथों में चला गया था—लेकिन उसका असर देशव्यापी होने के कारण वह ऐतिहासिक प्रभाव वाला बन गया और उसने ब्रिटिश हुकूमत को गहरा आघात लगाया।

टोटेनहम —तो इस दौर में कम्युनिस्ट भी पकड़े गये !

मैक्सवेल —केवल पकड़े ही नहीं गए, कइयों को गोली से भी उड़ाया गया। सात सौ से ऊपर जेल में ठूंस दिए गए और चार को फांसी दी गई।

टोटेनहम —क्या कम्युनिस्टों ने कांग्रेसियों को गिरफ्तार करवाने में ब्रिटिश सरकार की मदद की ?

मैक्सवेल —नहीं, उन्होंने एक ज्ञापन दिया जिसमें ब्रिटिश सरकार की निंदा की गई, कांग्रेसी और अन्य नेताओं को रिहा करने की मांग की गई। और राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करके उसके नेतृत्व में फासीवाद के विरुद्ध जनयुद्ध चलाने की योजना सामने रखी।

टोटेनहम —लेकिन हम कभी उन पर विश्वास नहीं कर सकते। इसीलिए मैंने सारी प्रांतीय सरकारों को सरकूलर भेज दिया कि वे इन मुओं पर कतई भरोसा न करें। वे सबसे ज्यादा खतरनाक हैं। वे ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से काम कर रहे हैं। वे मुस्लिम लीगी नहीं हैं जिनका नारा है—'बांटो और भागो', वे न हिन्दू राज चाहते हैं न मुस्लिम राज और न ही धनिकों का प्रजातन्त्र। उनका संघर्ष 'सर्वहारा' की तानाशाही कायम करने के लिए है।

जी. अहमद —ठीक है सर ! लेकिन यह कैसी उलझन है कि रूस की दोस्ती निभाने के लिहाज से इन लाल झंडेवालों का भी लिहाज करो, कांग्रेस की धमकी 'करो या मरो' के नारे के साथ 'भारत छोड़ो' जन आंदोलन के साथ भी निबटो, उपद्रवकारियों के विध्वंस के परिणाम स्वरूप होने वाले नुकसान का भी वहन करो, नफरत भरी जहरीली दलदल में फंसो और भलाई भी करो या भी बदले में बुराई ही पाते रहो—यह है आज हमारी हालत, किसी पर कोई विश्वास नहीं, किसी से कोई दुश्मनी नहीं। क्या ऐसा भी कहीं किया जा सकता है ?

टोटेनहम —जीना तो होगा ही अहमद ! हमारे हाथ में एक मौका है [illegible] इस दूसरे विश्व युद्ध ने दिया है। हम इन कांग्रेसियो, सोश[illegible] लिस्टों, कम्युनिस्टों, लीगियों और उनका साथ देने वाले म[illegible] दूर-किसानों और बुद्धिजीवियों को 'फासीवादी दलाल' क[illegible] देकर—जर्मनी-जापान का एजेन्ट करार देकर कुचल डालेंगे। इन नेताओं की वो गत बनाएंगे कि वे 'आजादी' का 'आजाद हिन्द फौज' का या 'जय हिन्द' का नाम लेना भूल जायेंगे [illegible] अहसास करवा देंगे कि ब्रिटिश हुकूमत से पंजा लड़ाने का नतीजा हाथ तुड़वाना ही होता है।

(इतने में जोर-जोर से नारे सुनाई पड़ते हैं "अंग्रेजों भारत छोड़ो" "हमारा नारा—जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द !" 'खून देंगे ! देश को सम्मान देंगे !' अंग्रेजों ! भारत छोड़ो ! कुछ देर बाद गोलियों के चलने की आवाज़ आती है। फिर 'इन्कलाब जिन्दाबाद !' और "अंग्रेजों भारत छोड़ो" के नारों के साथ चीख और फिर चुप्पी [illegible] पर्दा गिरता है)

अंक–५ दृश्य–४

(नेपथ्य में नारे गूंज रहे हैं—"हमारा नारा—जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द !" "इन्कलाब जिन्दाबाद !" 'ब्रिटिश साम्राज्य मुर्दाबाद !' 'आज़ाद हिन्द फौज के सेनानियो को रिहा करो।' 'तिरंगा-हरा और लाल निशान—[illegible] है हिन्दुस्तान !' मंच पर बीच में संघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में एक [illegible] बैठी है। संघर्ष समिति का संयोजक कम्युनिस्ट प्रतिनिधि उसके बाईं ओर [illegible] संयोजक के पास कांग्रेस का प्रतिनिधि और उसके पास मुस्लिम लीग का प्रतिनिधि बैठा है। सबके हाथ में कुछ कागज़ हैं और गम्भीर विचार-विमर्श की मुद्रा में दिखाई दे रहे हैं।)

संयोजक —साथियो ! सारे हालात बदल चुके हैं। फासिस्ट जर्मनी और जापान ने अपने समाजवादी और लोकतांत्रिक [illegible] के सामने हथियार डाल दिए, [illegible] [illegible] और आम [illegible] [illegible] [illegible] —

वजीन हो गया। अंग्रेजों के खिलाफ हमारी लड़ाई भी तब से एक अभूतपूर्व तेजी से आगे बढ़ चुकी है। अंग्रेजी हुकूमत ने हमारे सैनिकों को इंडोनेशिया और हिन्दचीन के आजादी के सपनों को कुचलने के लिए भेजने का कुचक्र रचा जिसे हमारे सैनिकों ने इन्कार कर दिया। उसने आजाद हिन्द फौज के कर्नल शाहनवाज, कैप्टिन ढिल्लो और लेफ्टिनेंट सहगल को सजाए देने की हिमाकत की जिसके खिलाफ सारे देश ने एक स्वर से आवाज बुलन्द की।

सैनिक प्रतिनिधि—इतना ही क्यों कॉमरेड! आप तो जानते ही हैं कि जहां एक ओर मजदूरों ने जगह-जगह हड़तालें करके लाठी-गोली का सामना करके अपनी कुर्बानियां दी, वहां बम्बई, दिल्ली, मेरठ पेशावर और दूसरी ओर कई जगहों पर सरकारी पुलिस-फौज के दरिंदों के शस्त्रों के खिलाफ शस्त्ररहित जनता ने सड़कों के बीच में बेरिकेड खड़ा करके, आग लगाकर प्रदर्शन करके और जैसा जो कुछ भी हुआ उस रूप में सड़कों पर लड़ाई लड़ी। और फिर सेना ने.... .

अध्यक्ष —सेना में भी बहुत कुछ हुआ?

सैनिक प्रतिनिधि—एक बदतमीज अंग्रेज अफसर ने बम्बई के जहाज 'तलवार' के नौसैनिकों को 'भिखमंगा' कह दिया। इसको बहाना बनाकर नौसैनिकों ने विद्रोह कर दिया। जहाजों के मस्तूल पर से यूनियन जैक को उतार दिया और उसकी जगह तिरंगा, बीच में लाल और फिर हरा झंडा लगा दिया और जोर से नारे लगाने लगे- इन्कलाब-जिन्दाबाद', हिन्दू-मुस्लिम-एक हैं', 'ब्रिटिश साम्राज्य-मुर्दाबाद!' 'आजाद हिन्द फौज के सेनानियों को-रिहा करो', 'हिंदेशिया से सेना-वापिस बुलाओ!' 'अंग्रेजो! भारत छोड़ो!', "कॉमरेड दत्ता को-रिहा करो!' उस दिन बम्बई के सभी 20,000 नाविकों ने विद्रोह कर दिया था। बम्बई की खबर पाकर कराची, कलकत्ता, विशाखापट्टनम और अन्य बन्दरगाहों के नाविकों और नौसैनिकों ने विद्रोह कर दिया। सात घंटों तक सरकारी सैनिकों और विद्रोही सैनिकों में जमकर गोलाबारी हुई और { / को युद्ध-विराम संधि हुई।

अध्यक्ष —हां, बम्बई में एक विशाल जनसभा भी इसी सिलसिले में हुई जिसमें कॉमरेड डांगे ने जोरदार तकरीर की थी।

सैनिक प्रतिनिधि—हां, इसका नतीजा हुआ दमन, लेकिन फिर खुद स्थल सेना और वायुसेना में भी असंतोष भड़कने लगा। इससे ब्रिटिश हुकूमत घबरा गई। लंदन में हाउस ऑफ़ कॉमन्स में एक तूफ़ानी बहस छिड़ गई और प्रधानमंत्री एटली को आड़े हाथों लिया गया। यदि अपने नेताओं ने दबाव न डाला होता तो नक्शा कुछ और होता। लेकिन यह नौसैनिक और सैनिक विद्रोह ब्रिटिश साम्राज्य पर मरणांतक प्रहार साबित हुआ है।

(पर्दे के पीछे से 'अंग्रेजों–भारत छोड़ो!' 'इन्कलाब जिन्दाबाद, 'हिन्दू-मुस्लिम–एक हैं!' 'ब्रिटिश साम्राज्य मुर्दाबाद!' 'कॉमरेड दत्ता को रिहा करो!' आज़ाद हिन्द फौज़ के बहादुरों को रिहा करो!' 'इन्कलाब जिन्दाबाद!' 'दुनिया भर के मेहनतकशो, एक हो!' इतने में गोली चलने की आवाज़ और 'इन्कलाब जिन्दाबाद!' के साथ चुप्पी)

संयोजक —आप ठीक कह रहे है साथी! एक ओर हमारे आज़ादी के जंग को विद्रोही सैनिक परवान चढ़ाने लगे, वहां दूसरी ओर किसानो का जुझारूपन भी सबसे ऊंची मंजिल पर पहुंच गया लगता है। क्यों किसान प्रतिनिधि भाई, आपका इस बारे में क्या ख़याल है?

किसान प्रतिनिधि —जब तेलंगाना में पुलिस ने किसान सभा के संगठन मंत्री कम्युनिस्ट नेता कॉमरेड कमरय्या की हत्या करदी, गुडागर्दी बलात्कार-मारपीट-आन्तक का नंगा नाच होने लगा तो तेलंगाना के किसानों और साथ ही आम अवाम में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। किसान कॉमरेड कमरय्या का गम लिए जुलूस के रूप मे जा रहे थे कि पुलिस और रजाकारों ने जुलूस पर हमला किया। यही से किसानों ने विद्रोह का झंडा ऊपर उठाया और एक लम्बा किसान मुक्ति संघर्ष छेड़ दिया जो सशस्त्र जनसंग्राम के रूप मे अब तक चल रहा है।

संयोजक —इसी प्रकार पुन्नप्रा-वायलार का संघर्ष किसानों और मज़दूरों का मिलाजुला संघर्ष है जो सामन्ती उत्पीड़न और साम्राज्य के

विरुद्ध वीरतापूर्ण मुक्तिसमर है। बागनकार, खेतमजदूर और नारियल की जटा की रस्सियों के कारखानों के मजदूरों ने जमींदारों के सामन्ती जुल्मों का मुकाबला करने के लिए कमर कस ली है। गांव-गांव में घुसकर फौज ने लोगों को गोली मारना शुरू किया है। यह देखकर लोगों ने अपने प्रतिरोध शिविर लगा लिए हैं। सरकारी फौज शिविर को घेर लेती है और गोलियों की बौछार करती है। जब गोलियां खत्म होती हैं तो सगीनों से हमला किया जाता है। इस प्रकार के संघर्ष में भी न जाने कितने किसानों को कुर्बानियां देनी पड़ रही हैं। उस नौजवान खेत मजदूरिन ने अपने जमींदार की काम पिपासा को शान्त करने से इन्कार किया तो उसे रस्सियों से बांधकर खींचकर जमींदार के घर ले जाया गया, उसके साथ बलात्कार किया गया, उसे यन्त्रणा दी गई, उसे गले तक जमीन में गाड़ दिया गया और तब उस 'बहादुर' जमींदार ने उसके सर को बूटों से कुचला। लेकिन अब ऐसे उत्पीड़न के खिलाफ किसानों ने युद्ध छेड़ दिया है। पुन्नपा वायलार संघर्ष ब्रिटिश साम्राज्य पर एक और मरणातक प्रहार है।

किसान प्रतिनिधि—और इधर यह बंगाल में ते-भागा आंदोलन नोआखाली से सटे हुए त्रिपुरा के हसनाबाद से आरम्भ हो चुका है। यहां के बटाईदार किसानोंने कॉमरेडों के नेतृत्व में यह ऐलान कर दिया है कि वे फसल का दो तिहाई भाग लेंगे और जोतदारों जमींदारों को सिर्फ एक तिहाई हिस्सा देंगे। इस तरह किसानों ने जमींदारों के खिलाफ बगावत करदी है। तेभागा किसान संघर्ष किसान सभा के नेतृत्व से चलने वाला बंगाल का सबसे व्यापक, सबसे बड़ा और जंगी संघर्ष है। यह संघर्ष ब्रिटिश साम्राज्य पर एक और मरणातक आघात है।

संयोजक — किसानों ने पंजाब, संयुक्त प्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र में भी जमींदारों के खिलाफ सशस्त्र संग्राम छेड़ दिया है। कहीं लगान न देने, कहीं कर्ज का भुगतान बन्द करवाने, कहीं बेदखली के खिलाफ और कहीं बेगार के खिलाफ मोर्चे बंदियां हो रही हैं। किसान कुर्बानियों पर कुर्बानियां देते जा रहे हैं। ब्रिटिश साम्राज्य पर ये सब किसान संघर्ष और अधिक प्रहार

पर प्रहार कर रहे हैं। ब्रिटिश सरकार बौखला चुकी है। और तो और उसके पिट्ठू राजे-महाराजे भी अपनी-अपनी रियासतों के विद्रोहों से परेशान हो उठे हैं। ऐसा लगता है कि चारों तरफ स्वाधीनता संग्राम की आग की लपटें तेजी से बढ़ती चली जा रही हैं और अंग्रेजी हुकूमत अपनी अन्तिम सांस लेने लगी है। ट्रेड यूनियन के साथी मजदूर आंदोलन का विकास तो देख ही रहे हैं।

(नेपथ्य में सुनाई दे रहा है "इन्कलाब जिन्दाबाद!" 'दुनिया भर के मेहनतकशो, एक हो!' हर जोर जुलम की टक्कर में–हड़ताल हमारा नारा है।' 'जो हमसे टकरायेगा मिट्टी में मिल जाएगा।' "अंग्रेजों, भारत छोड़ो!" "ब्रिटिश साम्राज्य मुर्दाबाद!" "कॉमरेड दत्ता को रिहा करो!" 'आजाद हिन्द फौज के वीरो को रिहा करो।' "भारतीय सेना को हिंदेशिया से वापिस बुलाओ!" इतने में गोलियां चलने की आवाजें और "इन्कलाब जिन्दाबाद!" कहते हुए लोगों का गिरना और फिर चुप्पी)

ट्रेड यूनियन नेता—सारे देश में मजदूर आंदोलन उग्र रूप धारण कर चुका है कॉमरेड! रेल्वे मजदूरों ने रेल का चक्का जाम कर दिया है। पुलिस जगह-जगह गोलियां चला रही है। सड़कों पर हड़तालियों का खून बह रहा है। ट्रेड यूनियन के चार प्रमुख नेता शहीद हो चुके है। मद्रास, संयुक्त प्रदेश, अहमदाबाद में हड़ताल का जोर है। इधर कानपुर कपड़ा मिलों और चमड़े के कारखानों में हड़ताल हो रही है तो कही कोयले की खानों मे संघर्ष छिड़ गया है। सरकार बरखास्तगी से लेकर हर प्रकार के दमन का हथियार चला रही है। कुल मिलाकर इस देश में इस समय 19 लाख 62 हजार मजदूर संघर्ष के मैदान में जूझ रहे हैं। यह ब्रिटिश सरकार पर सुसगठित शक्ति द्वारा किया जाने वाला एक और मरणांतक प्रहार है।

संयोजक —ठीक कहते हो साथी, साउथ इंडियन रेल्वे के 7 ट्रेड यूनियन नेताओं की बर्खास्तगी ने उत्तर-पश्चिमी रेल्वे क्षेत्र में भी आग पैदा करदी है। सारी ट्रेनें ठप्प करदी गई हैं और सदन तक में एक सनसनी फैल चुकी है। इस समय कांग्रेस, मुस्लिम लीग

कम्युनिस्ट पार्टी, सोशलिस्ट और अन्य सभी को अपने अन्दर के भेदभाव भुलाकर संघर्ष को और तेज़ करना है ताकि अंग्रेजी हुकूमत यहां से भाग जाने को मजबूर हो जाय ।

अध्यक्ष — (कांग्रेसी प्रतिनिधि की तरफ संकेत करते हुए) आपके क्या विचार हैं भाई साहब !

कांग्रेसी प्रतिनिधि — अध्यक्ष जी, हमें संघर्ष को आगे बढ़ाना चाहिए, लेकिन तोड़-फोड़ और हिंसा से बचना चाहिए ताकि बातचीत के रास्ते बन्द न हो जाय ।

अध्यक्ष — और लीग के क्या खयाल हैं इस मुद्दे पर ?

लीगी प्रतिनिधि — हमें जंग को आगे बढ़ाना ही चाहिए, लेकिन कहीं ऐसा न हो कि माइनोरिटी कम्युनिटी के हकों की हिफाजत ही न हो ।

अध्यक्ष — साथियो ! संघर्ष समिति की आम राय यह है कि जंग-ए-आजादी को और तेज किया जाय । इस जंग में साम्प्रदायिक झगड़ों को एक-दम खतम किया जाये । देश की आजादी को हासिल करने में किसी तरह की सौदेबाजी न की जाय ।

दूसरी बात यह है कि आपको जो जो प्रोग्राम इस कमेटी ने दिया है उसके हिसाब से काम का बटवारा और प्रोग्राम का निर्देशन करना होगा ।

अंक–५ दृश्य–५

(नेपथ्य में नारे लग रहे हैं—"लड़ के लेंगे पाकिस्तान !" 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान !' वाहे गुरु जी दा खालसा, सिखिस्तान जिन्दाबाद ! खालिस्तान ले के रहेंगे ।' 'पठानिस्तान जिन्दाबाद !' और फिर भीड़ भड़क्के के बीच 'मारो ! मारो ! की आवाज़ ! गोलियां छूटने की आवाज़ ! बीच-बीच में 'ओह ! आह !' 'हर हर महादेव !' 'जय काली !' और 'अल्ला हो अकब्बर' !)

(डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बतौर अध्यक्ष के बैठे हैं । जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, अबुलकलाम आज़ाद, एम. आसफ़अली, सी. राजगोपालाचारी, शरतचंद्र बोस, जान मथाई, सरदार बलदेवसिंह, सर अआफ़तअहमदखां, जगजीवन राम, सैय्यद अली जहीर, के.एच. भाभा आदि नेता बैठे हैं । बीच में माउंटबेटन भी दिखाई दे रहे हैं ।)

डॉ. राजेन्द्रप्रसाद — हम आज सर्वतन्त्र स्वतन्त्र भारतीय गणतन्त्रात्मक संघ की स्थापना की घोषणा करते है ।

(तालियों की गड़-गड़ाहट)

जवाहरलाल नेहरू — भाइयो और बहनो ! देश में और ज्यादा साम्प्रदायिक खून खराबा न हो—इससे बचने के लिए मजबूर होकर हमें लार्ड माउंटबेटन द्वारा पेश की गई देश के विभाजन की तजवीज को मान लेना पड़ा

संविधान सभा के माननीय सदस्यो और अन्य गणमान्य महानुभावो ! इस समय 14 अगस्त 1947 की रात के 12 बज चुके और अब 15 अगस्त 1947 का आरम्भ हो चुका हैं । आधी रात की इस घड़ी में जब दुनिया सो रही है, भारत जागकर जीवन और स्वतन्त्रता प्राप्ति करेगा । एक ऐसा क्षण आता है, जो इतिहास में बहुत ही कम आता है जब हम पुराने युग से नए में कदम रखते हैं, जब एक युग खत्म होता है और जब एक राष्ट्र की बरसों से दबी आत्मा बोल उठती है ।

यह बहुत ही अच्छी बात है कि इस पवित्र क्षण में हम भारत और उसकी जनता की सेवा और उससे भी बढ़कर मानवता की सेवा करने की शपथ लेते हैं ।

सरदार पटेल —हम सब देश वासियों को इस बात पर गौरव महसूस होता है कि आज सदियों के बाद देश स्वाधीन हुआ। हमें इसे एक मजबूत राष्ट्र बनाना है। हम शपथ लेते हैं कि हम जनता की सेवा में समर्पण की भावना से काम करेंगे।

अबुलकलामआजाद-आज हमें इस आज़ाद मुल्क की खिदमत करने का मौका मिला है—इससे बड़ी खुश किस्मती क्या हो सकती है। हम यह अहद लेते हैं कि हम मुल्क के प्रति जी जान से वफादार रहेंगे।

सी. राजगोपालाचारी—भगवान् की परम कृपा से और इस देश की जनता के आत्मबल की वजह से आज हम स्वाधीन हुए। हम आस्थापूर्वक शपथ लेते हैं कि देश की सेवा में तन, मन और धन को अर्पित कर अपना कर्त्तव्य निभाएंगे।

(इसके बाद "वन्दे मातरम्" गायन प्रारम्भ होता है और सब खड़े हो जाते हैं। सहगान के समाप्त होने पर सब बैठ जाते हैं)

जवाहरलालनेहरू—आज सबसे पहले हम उन लाखों देश भक्त, शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे जिनकी कुर्बानियों की वजह से देश आज़ाद हुआ है।

(सब श्रद्धांजलि देने के लिए मौन खड़े हो जाते है।)

जवाहरलालनेहरू—हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं कि जिनके कुशल मार्गदर्शन में हमने जगे आज़ादी के कठोर रास्ते को कामयाबी के साथ तय किया। सारा देश उन्हें सर्वोच्च सम्मान अर्पित करता है। वे आज भी साम्प्रदायिक एकता के मिशन में व्यस्त है। उनके त्याग, उनकी सत्यनिष्ठा और परम पवित्र भावना के प्रति हम सब नत-मस्तक हैं।

(सब "महात्मा गाधी की जय" का नारा लगाते हैं। इसके बाद रामधुन होती है) :—

रघुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम

अंक–५ दृश्य–५

(नेपथ्य में नारे लग रहे हैं—"लड़ के लेंगे पाकिस्तान !" 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान !' वाहे गुरु जी दा खालसा, सिखिस्तान जिन्दाबाद ! खालिस्तान ले के रहेंगे ।' 'पठानिस्तान जिन्दाबाद !' और फिर भीड़ भड़क्के के बीच 'मारो ! मारो ! की आवाज़ ! गोलियां छूटने की आवाज़ ! बीच-बीच में 'ग्रोह ! आह !' 'हर हर महादेव !' 'जय काली !' और 'अल्ला हो अकब्बर' !)

(डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बतौर अध्यक्ष के बैठे हैं । जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, अबुलकलाम आज़ाद, एम. आसफ़अली, सी. राजगोपालाचारी, शरतचंद्र बोस, जान मथाई, सरदार बलदेवसिंह, सर शग्राफ़तग्रहमदखां, जगजीवन राम, सैय्यद अली जहीर, के.एच. भाभा आदि नेता बैठे हैं । बीच में माउंटबेटन भी दिखाई दे रहे हैं ।)

डॉ. राजेन्द्रप्रसाद—हम आज सर्वतन्त्र स्वतन्त्र भारतीय गणतन्त्रात्मक संघ की स्थापना की घोषणा करते हैं ।

(तालियों की गड़-गड़ाहट)

जवाहरलाल नेहरू—भाइयो और बहनो ! देश में और ज्यादा साम्प्रदायिक खून खराबा न हो—इससे बचने के लिए मजबूर होकर हमें लार्ड माउंटबेटन द्वारा पेश की गई देश के विभाजन की तजवीज को मान लेना पड़ा

संविधान सभा के माननीय सदस्यो और अन्य गणमान्य महानुभावो ! इस समय 14 अगस्त 1947 को रात के 12 बज चुके और अब 15 अगस्त 1947 का आरम्भ हो चुका है । आधी रात की इस घड़ी में जब दुनिया सो रही भारत जागकर जीवन और
ऐसा क्षण आता है, जो
हम पुराने युग से नए में
होता है और जब
उठती है ।

यह बड़
भारत और

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता !
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिश मांगे
गाहे तव जय गाथा
जनगण मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य विधाता !
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे !

राष्ट्रगीत की समाप्ति पर फिर तीन बार 'जय हिन्द', 'जय हिन्द' 'जय हिन्द' के नारे गूंजते हैं और तब पटाखों की आवाज़ के साथ जश्न समाप्त होता है। *लेकिन भीड़ ज्यों-ज्यों बिखरने लगती है उन्हें रेडियो से आज़ादी के मुशायरे की ये लाइनें सुनाई पड़ती रहती हैं :—*

ऐ, रहबरे मुल्क-ओ-कौम बता
यह किसका लहू है, कौन मरा ?

(पर्दा गिरता है।)

सबको सम्मति दे भगवान्
और

("वैष्णव जन तो तेने कहिए" का सहगान होता है। कुरान, गीता और बाईबल के पाठ किए जाते हैं)

(जवाहरलाल नेहरू "झंडा रोहण" के लिए ले जाए जाते हैं। वे मंच पर से झंडे की डोरी थामकर उसे खींचते हैं। पुष्पवर्षा के साथ तिरंगा लहराने लगता है। नेहरू जी सलामी लेते हैं। सभी ध्वज-गान करते हैं।

जवाहरलाल नेहरू—दोस्तों और साथियों, आज सदियों बाद भारत ने आजादी की सांस ली है। भारत कोई नदियों और पहाड़ों से घिरा भू भाग ही नहीं है, असली भारत है इस भू भाग में रहने वाले लोगों का समाज। यह वह समाज है जो इतिहास की गति के साथ-साथ आगे बढ़ता है। हमें इस भारतीय समाज के आर्थिक पिछड़ेपन को मिटाना है, गरीबों को शोषण से मुक्त करना है और इसके सांस्कृतिक विकास की गति को तेज करना है ताकि हम दुनिया के साथ कंधे से कंधा मिलाकर गौरव के साथ चल सकें। आज का बच्चा कल का नागरिक है अतः उसके विकास के लिए हमें हर सम्भव प्रयत्न करना होगा। उसको वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की शिक्षा देनी होगी।

हम सब इस देश को ऊंचा उठाने की कोशिश करेंगे तो कोई ऐसा कारण नहीं कि हम उसे ऊंचा न उठा सकें। माना कि काम मुश्किल है, लेकिन मुश्किल काम ही तो करने के होते हैं। तो आओ, आज मेरे साथ आप भी शपथ लो कि नए भारत के निर्माण में हम सब मिलकर दिलो-जान से हिस्सा लेंगे! मेरे साथ मिलकर बोलो—'जय हिंद!' 'जय हिंद!'

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता !
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा
जनगण मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य विधाता !
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे !

राष्ट्रगीत की समाप्ति पर फिर तीन बार 'जय हिन्द', 'जय हिन्द' 'जय हिन्द' के नारे गूंजते हैं और तब पटाखों की आवाज़ के साथ जश्न समाप्त होता है। लेकिन भीड़ ज्यों-ज्यों बिखरने लगती है उन्हें रेडियो से आज़ादी के मुशायरे की ये लाइनें सुनाई पड़ती रहती है —

ऐ, रहबरे मुल्क-ओ-कौम बता
यह किसका लहू है, कौन मरा ?

(पर्दा गिरता है।)